अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका

मंथन

संरक्षक एवं प्रेरणास्रोत
श्री दर्पण जैन
संयुक्त सचिव एवं निदेशक (निरीक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण)

प्रधान संपादक
डॉ. जे. एस. रेड्डी
अपर निदेशक

सम्पादक
श्री मनोज कुमार गुप्ता
उप निदेशक (तकनीकी)

सम्पादक मण्डल सदस्य

डॉ. आनंद गुप्ता
संयुक्त निदेशक (तकनीकी)

श्री वसी असगर
सहायक निदेशक (तकनीकी)

निर्यात निरीक्षण परिषद

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, वाणिज्य विभाग, भारत सरकार)
दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर, पूर्वी किदवई नगर,
नई दिल्ली–110023, भारत, दूरभाष : 011–20815386 / 87/88

पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निर्यात निरीक्षण परिषद, हिंदी अनुभाग या सम्पादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

निःशुल्क वितरण के लिए

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं.
1.	संदेश, श्री राजेश अग्रवाल, अपर सचिव, अध्यक्ष, निनिप	3
2.	निदेशक की कलम से– श्री दर्पण जैन, आई.ए.एस., संयुक्त सचिव एवं निदेशक, निनिप	4
3.	संदेश, डॉ. जे. एस. रेड्डी, अपर निदेशक, निनिप, नई दिल्ली	5
4.	संपादकीय, श्री मनोज कुमार गुप्ता, उप निदेशक (तकनीकी), निनिप	6
5.	निर्यात निरीक्षण परिषद एवं अभिकरणों में हिंदी दिवस/पखवाड़े 2023 का आयोजन	7
6.	जी–20 सम्मेलन में भारत की भूमिका, श्री विवेक कुमार सिंह, सहायक निदेशक (तकनीकी), निनिप	15
7.	द्रव्यमान मापन के क्षेत्र में मध्यवर्ती जाँचों द्वारा परिणामों की वैधता सुनिश्चित करना, श्री अमिताभ पाण्डेय, सहायक निदेशक (तकनीकी), निर्यात निरीक्षण अभिकरण –मुंबई (प्रयोगशाला)	19
8.	श्वेत क्रांति भारत में दूध उत्पादन का स्वर्णिम युग, श्री लक्ष्मण मीणा, सहायक निदेशक, निर्यात निरीक्षण अभिकरण–दिल्ली	23
9.	शहद के फायदे, गुण, स्वास्थ्य लाभ, उपयोग और असली नकली शहद की पहचान, डॉ. नीरज प्रफुल्ल अवस्थी, सहायक निदेशक, निर्यात निरीक्षण अभिकरण–मुंबई	28
10.	बाकी है, श्री विकास दहिया, तकनीकी अधिकारी, निनिप	32
11.	भारतीय संदर्भ में खाद्य सुरक्षाः इसका महत्व और इसके घटक, श्री चिराग गाडी, तकनीकी अधिकारी, निनिप	33
12.	पर्यावरण संरक्षण स्वस्थ जीवन के लिए बेहद आवश्यक, शेखरानंद, क.हि.अ., निनिप	37
13.	आत्मा और परमात्मा का आपस में संबंध क्या है?, श्री बृजेश कुमार शर्मा, क.हि.अ., निनिअ–दिल्ली	41
14.	नैतिक मार्गदर्शन में नियम, कानून एवं अंर्तआत्मा का साथ, श्रीमती आकांक्षा मिश्रा, लिपिक श्रेणी–II, निनिअ–दिल्ली	44
15.	बेटियाँ, श्रीमती अनु कुमारी, लिपिक श्रेणी–II, निनिअ–दिल्ली	45
16.	सकारात्मकता, श्री आकाश कुमार चौबे, लिपिक श्रेणी–II, निनिअ–कोलकाता	46
17.	असफलता में ही छुपी है सफलता, श्री कमल डे, एमटीएस, निनिअ–दिल्ली	47
18.	निर्यात निरीक्षण परिषद/ निर्यात निरीक्षण अभिकरण कार्यालयों में अप्रैल, 2023 से सितंबर, 2023 तक सेवानिवृत अधिकारी एवं कर्मचारीगण	48

श्री राजेश अग्रवाल, अपर सचिव
अध्यक्ष
निर्यात निरीक्षण परिषद

भारत सरकार
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय
वाणिज्य विभाग
उद्योग भवन, नई दिल्ली–110 011

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है की निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''मंथन'' का अक्टूबर, 2023 अंक प्रकाशित होने जा रहा है। पत्रिका में कार्यालय के महत्वपूर्ण गतिविधियों और उपलब्धियों का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

हिंदी हमारी राजभाषा है इस नाते सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग हमारा संवैधानिक तथा नैतिक कर्तव्य है। इसी कर्तव्य को निभाने के लिए विभिन्न कार्यालयों द्वारा अपनी पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जिसके माध्यम से हिंदी को लोकप्रिय बनाने के साथ–साथ कार्यालयों के सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा को एक मंच प्रदान किया जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति में पत्रिका 'मंथन' पहले भी सफल रही है एवं भविष्य में इसके सफल प्रकाशन की मैं कामना करता हूँ तथा पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनायें प्रदान करता हूँ।

वर्ष 2023 के हिंदी पखवाड़े (14 सितम्बर, 2023 से 28 सितम्बर, 2023) के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से इस पर्व का आयोजन किया जाता है। टिप्पण, अनुवाद जैसी प्रतियोगिताओं के द्वारा कार्मिकों को हिंदी राजभाषा का अभ्यास कराया जाता है। जिससे कार्मिकों की हिंदी भाषा में लेखन क्षमता बढ़े।

पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों–कर्मचारियों के सफल प्रयासों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं।

(राजेश अग्रवाल)
अपर सचिव, अध्यक्ष
निर्यात निरीक्षण परिषद

सत्यमेव जयते

निर्यात निरीक्षण परिषद्

(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत

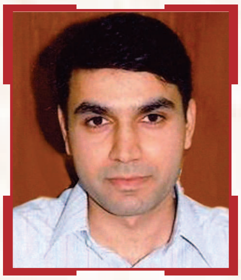

निदेशक की कलम से

मेरे प्रिय सहकर्मियों

मुझे यह जानकार अपार प्रसन्नता हो रही है की निर्यात निरीक्षण परिषद कार्यालय अपनी अर्धवार्षिक पत्रिका 'मंथन' अक्टूबर, 2023 अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच सदियों से हिंदी संपर्क भाषा के रूप में स्थापित है और संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम कर रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता व सुबोधता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वव्यापकता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। वैश्विक मंचों पर माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से हिंदी भाषा का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इसलिए यह हमारा नैतिक कर्तव्य है की हम हिंदी भाषा का प्रयोग ना सिर्फ दैनिक जीवन में अपितु कार्यालयीन कार्यों में भी करे।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार–प्रसार करने के लिए प्रतिबद्ध है और वह इस दिशा में निरंतर कार्यरत है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन तत्परता के साथ करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आम जनता सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ निर्बाध रूप से उठा सके।

पत्रिका के सम्पादक मंडल, रचनाकारों, तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(दर्पण जैन)
संयुक्त सचिव एवं निदेशक
निर्यात निरीक्षण परिषद

निर्यात निरीक्षण परिषद्
(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत

संदेश

मंथन अर्धवार्षिक पत्रिका के सहृदय पाठको, लेखकों और सभी हिंदी प्रेमियों को मेरा हार्दिक अभिनंदन

यह अत्यंत हर्ष का विषय है की परिषद कार्यालय की अर्ध–वार्षिक हिंदी पत्रिका 'मंथन' अक्टूबर, 2023 का अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। आपका यह प्रयास सराहनीय है क्यूंकी ऐसे प्रकाशनों के माध्यम से जहां देश की राजभाषा का गौरव बढ़ता है वही इसके लेखकों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रकाशित भावपूर्ण मौलिक लेखों/रचनाओं के माध्यम से जनसामान्य को विभाग द्वारा किए जा रहे क्रियाकलापों के साथ विविधतापूर्ण नई जानकारियाँ मिलती है जो की ज्ञानवर्धन में सहायक सिद्ध होती है।

राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है। हिंदी विभिन्न भाषा–भाषियों तथा संस्कृतियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है और विचारों एवं भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है। यह हमारा संवैधानिक दायित्व और नैतिक कर्तव्य भी है और यह हमारा संकल्प एवं लक्ष्य होना चाहिए की हम हिंदी को अपने विभागीय कार्यालीन कार्यों में अधिकाधिक प्रयोग कर राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार लक्ष्यों की प्राप्ति कर सके। मुझे विश्वास है की पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाकारों के अमूल्य सहयोग से रचित रचनाएँ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होगी।

पत्रिका के संपादक मण्डल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों–कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें।

(डॉ जे. एस. रेड्डी)
अपर निदेशक
निर्यात निरक्षण परिषद

E-mail : eic@eicindia.gov.in
Website : www.eicindia.gov.in
ग्राम : निर्यातगुण
Grames : Shipmentquality
दूरभाष / Phone } 011-20815386/87/88

निर्यात निरीक्षण परिषद्
(आईएसओ 9001:2008 प्रमाणित संस्थान)
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
दूसरी मंजिल, बी–प्लेट, ब्लॉक–1, वाणिज्यिक परिसर,
पूर्वी किदवई नगर, नई दिल्ली–110023, भारत

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

विभिन्न साहित्यिक विधाओं के रंग–बिरंगे पुष्पों की सुगंध बिखेरती ''मंथन'' पत्रिका का अक्टूबर, 2023 अंक आप सभी के सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

विभागीय पत्रिका 'मंथन' ना सिर्फ कार्मिकों को मनोरंजित करती है, अपितु समय–समय पर निर्यात निरीक्षण परिषद और निर्यात निरीक्षण अभिकरणों की गतिविधियों एवं उपलब्धियों से भी अवगत कराती है। 'मंथन' पत्रिका में ''ईआईसी'' की गतिविधियों के साथ–साथ, तकनीकी क्षेत्र में प्रयोग होने वाली पद्धतियों से भी कार्मिकों को अवगत कराते हुए ज्ञानवर्धन करती है।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी सितम्बर माह में भारत सरकार के दिशा–निर्देश के अनुसार राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के विकास एवं प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 14 सितम्बर, 2023 से 28 सितम्बर, 2023 तक परिषद कार्यालय में ''हिंदी पखवाड़े'' का आयोजन किया गया। इसी परिपेक्ष्य में 'मंथन' पत्रिका में राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के विकास एवं प्रयोग को बढ़ावा देने के साथ ही साथ कार्यालयीन कार्यों में हिंदी राजभाषा के प्रयोग में कार्मिकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से सामग्री को सरल एवं सुरुचिपूर्ण बनाया गया है।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है की 'मंथन' पत्रिका के पाठक इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री से अवश्य ही लाभान्वित होंगे। आपके सुझाव एवं प्रतिक्रिया रचनाकारों के प्रयास को और अधिक सुदृढ़ एवं सबल बनाते हुए पत्रिका को उत्तरोत्तर गतिशीलता देने में सार्थक एवं समर्थ होगें। हम आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं का हृदय से स्वागत करते हैं।

(मनोज कुमार गुप्ता)
उप–निदेशक (तकनीकी)
निनिप

निर्यात निरीक्षण परिषद एवं अभिकरणों में हिंदी दिवस / पखवाड़े 2023 का आयोजन

पखवाड़े का शुभारंभ

गृह मंत्रालय, भारत–सरकार के राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार एवं कार्यक्रमानुसार, अपर निदेशक के आवश्यक अनुमोदनानुसार **विगत वर्षों** की भांति इस वर्ष भी **ऐतिहासिक पर्व हिंदी दिवस पखवाड़े** का आयोजन **14 सितम्बर 2023 से 28 सितम्बर 2023** तक बड़े हर्षोल्लास एवं परम्परागत रूप से परिषद कार्यालय एवं उसके अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा समान रूप से मनाया गया। दिनाँक 28 सितम्बर, 2023 को केन्द्र सरकार का राजकीय अवकाश होने के कारण दिनाँक 27 सितम्बर 2023 को हिंदी दिवस/पखवाड़े का समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यालय के मुख्य द्वार पर, समिति कक्ष में संबंधित पखवाड़े के आयोजन के बैनर लगाए गए, सभी अधिकारी/कर्मचारियों में इस समारोह के लिए विशेष उत्साह था। दिनाँक **14 सितम्बर 2023 को ऐतिहासिक पर्व हिंदी दिवस पखवाड़े का उद्घाटन समारोह 11.00 बजे प्रातः** अपर निदेशक महोदय डॉ. जे. एस. रेड्डी जी एवं संयुक्त निदेशक डॉ. आनंद गुप्ता जी की उपस्थिति में किया गया। सभी अधिकारी/कर्मचारियों ने आयोजित समारोह पर करतल ध्वनि से आगाज कर शुभारंभ किया।

पखवाड़े के शुभारंभ समारोह पर अपर निदेशक महोदय, डॉ. जे. एस. रेड्डी जी का सारगर्भित संदेश

अपर निदेशक महोदय ने सभी उपस्थित कार्मिकों के समक्ष संदेश का पठन–पाठन किया, संदेश की एक प्रति अभिलेख के रूप में सभी अधिकारी/कर्मचारियों में वितरित की गई। अपर निदेशक महोदय एवं संयुक्त निदेशक महोदय ने सभी कार्मिकों को सम्बोधित कर हिंदी दिवस के आयोजन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए पखवाड़े की महत्वता को बताते हुए विशेष पल जो हमें

राजभाषा हिंदी से जोड़ता है तथा मर्म हृदय को भाव–विभोर करता है, तथा विशेष रूप से हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित किया। तथा सभी उपस्थित कार्मिकों को पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिताओं में बढ़–चढ़कर भाग लेने का सुझाव दिया, कहा कि आपके अमूल्य सहयोग से हिंदी दिवस पखवाड़े को गरिमा को सफल बनाया जा सकेगा।

पखवाड़े के दौरान **निबंध/टिप्पण/स्मरण/श्रुतलेख/प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं** आयोजित की गई। सफल प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सभी प्रतिभागियों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहन पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। प्रतिभागियों की प्रतिभा का आंकन हिंदी दिवस के चयनित मंडल के द्वारा किया गया।

पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजनः

पखवाड़े के दौरान दिनाँक **16 सितम्बर, 2023 को निबंध प्रतियोगिता** आयोजित की गई, प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार विजेता श्री विवेक कुमार सिहं, सहायक निदेशक द्वितीय पुरस्कार, श्रीमती अंजु शर्मा, लिपिक श्रेणी तृतीय पुरस्कार, श्री राजेश, डीईओ को प्राप्त हुआ।

दिनाँक 19 सितम्बर 2023 को प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें सुश्री रीतिका, डीईओ को प्रथम पुरस्कार, द्वितीय पुरस्कार श्रीमती संजना रॉय, डीईओ एवं तृतीय पुरस्कार श्रीमती अंजु शर्मा, लिपिक श्रेणी–II को प्राप्त हुआ। दिनाँक **20 सितम्बर, 2023 को स्मरण प्रतियोगिता** आयोजित की गई। इसमें प्रथम पुरस्कार सुश्री हेताक्षी आर परमार, लिपिक श्रेणी–II, द्वितीय पुरस्कार श्रीमती शालनी, तृतीय पुरस्कार चिराग गाडी, तकनीकी अधिकारी को प्राप्त हुआ।

निनिप में हिंदी दिवस/पखवाड़ा के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन

दिनाँक 22 सितम्बर, 2023 को श्रुतलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें प्रथम पुरस्कार श्री शशि प्रकाश त्रिपाठी, तकनीकी अधिकारी, द्वितीय पुरस्कार श्री चिराग गाडी, तकनीकी अधिकारी, तृतीय पुरस्कार श्रीमती अंजु शर्मा लिपिक श्रेणी–II को प्राप्त हुआ। **दिनाँक 26 सितम्बर, 2023 को टिप्पण प्रतियोगिता** आयोजित की गई, इसमें प्रथम पुरस्कार डॉ. प्रकाश गुप्ता, तकनीकी अधिकारी द्वितीय पुरस्कार श्रीमती अंजु शर्मा, लिपिक श्रेणी–II, तृतीय पुरस्कार श्री विवेक कुमार सिहं, सहायक निदेशक को प्राप्त हुआ। उपरोक्त प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया।

पखवाड़े का समापन समारोह

दिनाँक 28 सितम्बर 2023 को केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजकीय अवकाश होने के कारण हिंदी दिवस पखवाड़े का समापन समारोह दिनाँक 27 सितम्बर 2023 को अपर निदेशक महोदय की अध्यक्षता में आयोजित किया गया। अपर निदेशक महोदय ने परिषद कार्यालय के समस्त कार्मिको को अपने सम्बोधन के द्वारा यह अवगत कराया कि सभी अधिकारी/कर्मचारी गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग के दिशा–निर्देशों एवं राजभाषा कार्यान्वयन हेतु अपना दैनिक कार्यालीन कार्य पूर्णतः राजभाषा हिंदी में करें, ताकि राजभाषा पत्राचार के लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके। आपके सराहनीय प्रयासों से यह कार्य संभव हो सकता है। हमें यह अपना नैतिक एवं संवैधानिक दायित्व समझना चाहिए, तथा ऐतिहासिक पर्व हिंदी दिवस के पावन अवसर पर हमे संकल्प लेना चाहिए, कि हम अपना संपूर्ण कार्य हिंदी में ही करेगें, अपर निदेशक एवं संयुक्त निदेशक महोदय तथा निर्णायक मंडल के सदस्यों के द्वारा संयुक्त रूप से सभी विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए। अपर निदेशक महोदय ने सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद करते हुए कहा आप सभी के सहयोग से यह हिंदी दिवस पखवाड़ा सफल हो पाया है समारोह के समापन पर उप निदेशक तकनीकी एवं राजभाषा प्रभारी श्री मनोज गुप्ता ने सभी उपस्थित अधिकारी/कर्मचारियों को हिंदी दिवस की महत्तवता एवं विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा संविधान सभा ने **14 सितम्बर, 1949** को हिंदी राजभाषा का दर्जा दिया। इस पावन दिवस की स्मृति में प्रत्येक वर्ष हिंदी दिवस मनाया जाता है, **वर्ष 1975 में** राजभाषा विभाग की स्थापना की गई, और राजभाषा विभाग को यह दायित्व सौंपा गया कि केन्द्र सरकार के कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी राजभाषा में किया जाना सुनिश्चित किया जाये तथा केन्द्र सरकार के कार्यालयों में अधिकारी/कर्मचारी हेतु राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता तथा उसके उत्तरोतर प्रयोग एवं प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन क्षेत्र में गति लाने

के उद्देश्य से प्रतिवर्ष हिंदी दिवस पखवाड़े का आयोजन किया जाये। इसी क्रम में प्रत्येक कार्यालय, विभाग भी अपने कार्मिकों को हिंदी में कार्य निष्पादित करने तथा राजभाषा हिंदी के प्रति रूचि जागृत करने के लिए हिंदी दिवस/पखवाड़े के दौरान प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

निर्यात निरीक्षण परिषद में समापन समारोह पर पुरस्कार वितरण की झलकियाँ

पखवाड़े के दौरान हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और इसे अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा–निर्देशों, नियमों/प्रावधानों पर अमल किया जाता है। हमे अपनी भाषा के प्रति लगाव प्रेम, अनुराग, राष्ट्र प्रेम तभी संभव है जब हम अपने दैनिक कार्यो में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करें, हिंदी ने सभी भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोकर सदैव अनेकता में एकता की भावना को पुष्ट किया है। अन्त सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को सुझाव दिया, कि वह अपना कार्यालय का शत–प्रतिशत कार्य हिंदी में करे, यह हमारी प्राथमिकता है। पखवाड़े में सम्मिलित एवं भाग लेने पर सभी अधिकारी/कर्मचारियों का हार्दिक धन्यवाद करते हुए हिंदी दिवस का समापन किया गया।

निर्यात निरीक्षण अभिकरणों में हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन

निर्यात निरीक्षण अभिकरण– दिल्ली में विगत वर्षों की तरह इस वर्ष भी राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार दिनांक **14 सितंबर 2022 से 28 सितम्बर 2023** तक हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन अति उत्साह के साथ किया गया। निनिअ–दिल्ली में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य के पर अपर निदेशक महोदय, निनिप के संदेश का पठन–पाठन **दिनांक 14 सितंबर 2023** को किया गया।

इसके अतिरिक्त निनिअ–दिल्ली में **निबंध, टिप्पण, आलेखन, अनुवाद प्रतियोगिताएं** आयोजित की गयी। निनिअ–दिल्ली में हिंदी दिवस / पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 27.09.2023 को संयुक्त निदेशक महोदय की अध्यक्षता में बहुत ही उत्कृष्ट रूप से आयोजित किया गया। संयुक्त निदेशक महोदय ने अपने भाषण में हिंदी पखवाड़ा समारोह के आयोजन से सरकार की राजभाषा नीति को तेज़ी से अमल में लाने हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रयास को प्रोत्साहित करने के

महत्वपूर्ण उद्देश्य पर प्रकाश डाला और पखवाड़ा समारोह के पश्चात भी राजभाषा के कार्यान्वयन में निरंतर प्रयास करने का आह्वान किया। उन्होंने कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सक्रिय सहयोग एवं बहुमूल्य सहभागिता से कार्यक्रम को सफलता से आयोजित करने हेतु कार्यान्वयन किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेताओं को संयुक्त निदेशक महोदय के द्वारा शील्ड को पुरुस्कार के रुप में देकर सम्मानित किया।

निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोच्चि: हिंदी दिवस के आयोजन का शुभारंभ दिनांक 14.9.2023 को श्रीमती सेरिन जोसफ, प्रयोगशाला सहायक श्रेणी–II द्वारा की गई ईश्वर वंदना से किया गया। श्री रवि शंकर, संयुक्त निदेशक द्वारा परंपरागत दीप प्रज्वलित करते हुए समारोह का उद्‌घाटन किया गया। अन्य उपस्थित सदस्यों के द्वारा इसमें सहभागिता हुई। श्रीमती अखिला वि.पि., सहायक निदेशक द्वारा स्वागत भाषण किया गया। अध्यक्ष महोदय द्वारा हिंदी दिवस की महत्ता के प्रति सभी का ध्यान आकर्षित किया गया तथा अपर निदेशक महोदय, निनिप, नई दिल्ली से प्राप्त संदेश का वाचन भी किया गया। श्रीमती मायादेवी एम.पी., तकनीकी अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

समापन समारोह कार्यक्रम पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए। श्रीमती सेरिन जोसफ़, प्रयोगशाला सहायक श्रेणी–II द्वारा किए गए हिंदी गीत गायन से सभा की शोभा बढ़ गई। अध्यक्ष महोदय एवं सभा में उपस्थित सदस्यों को किए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ सभा समाप्त हुई। कार्यक्रम के दौरान लिए गए कुछ छायाचित्र नीचे दिए गए हैं:

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा समारोह के उद्‌घाटन समारोह में दीप प्रज्वलित करके उद्‌घाटन कार्य कर रहे हैं कार्यालय प्रभारी श्री रवि शंकर, संयुक्त निदेशक

हिंदी दिवस का आयोजन–सभा का दृश्य

इसके अतिरिक्त निनिअ–मुंबई, चेन्नई, कोलकाता में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार दिनांक 14 सितंबर 2022 से 28 सितम्बर 2023 तक हिंदी दिवस/पखवाड़े का आयोजन अति उत्साह के साथ किया गया।

जी–20 सम्मेलन में भारत की भूमिका

श्री विवेक कुमार सिंह
सहायक निदेशक (तकनीकी)
निनिप

जी–20 से अभिप्राय 'ग्रुप ऑफ़ ट्वेंटी' जिसमे 19 संम्प्रभु राज्य, अफ्रीकीय संघ और यूरोपीय संघ शामिल हैं। इन 19 देशों में 7 विकसित देश तथा 12 विकासशील देश है जिनमे से भारत भी एक सदस्य देश है। इस वर्ष 2023 में भारत को जी–20 की अध्यक्षता का अवसर मिला है, जो की जी–20 की अठारहवीं मीटिंग है। यह आर्थिक विकास को ध्यान में रखते हुए वैश्विक पटल पर भारत के परचम को लहराने का एक विशेष अवसर है, जिसके लिए भारत हर प्रकार के अग्रणी प्रयास कर रहा है। यह भारत के विश्व गुरु बनने के सपने को साकार करने का एक सुनहरा अवसर है। जी–20 जिसको परिलक्षित करने के उद्देश्य से इन्डोनेशिया में जी–20 की मीटिंग में प्रधानमंत्री जी ने भारत के अध्यक्षता में होने वाले जी–20 का प्रस्ताव कमेटी के समक्ष नवंबर 2022 को प्रस्तुत किया जिसका विषय वसुधैव कुटुम्बकम ''एक पृथ्वी एक परिवार और एक साथ साझा भविष्य'' "one earth, one family, one future" रखा गया, अपने इस विचार को भारत हर वैश्विक मैच पर प्रदर्शित भी करता रहा है चाहे वह जलवायु की बात हो, भ्रष्टाचार की बात हो, आर्थिक सहयोग और प्रौद्योगिकी या फिर अन्य विषय।

जी–20 की शुरुआत क्यूँ और कब:

1997 की एशियाई देशों की आर्थिक मंदी को ध्यान में रखते हुए, विकसित देशों ने आर्थिक सहयोग और व्यापार को ध्यान में रखकर विकसित और विकासशील व्यवस्थाओं को साथ लाने के उद्देश्य के आधार पर कुछ सात देशों ने मिलकर 1999 में ग्रुप बनाया और इसके वित्त मंत्री और केंद्रीय रिजर्व बैंक के गवर्नर की मीटिंग शुरू हुई जिसमें बाद में और देशों ने भी इस ग्रुप में जुड़ना शुरू किया। इसमे हाल ही में भारत ने अफ्रीकी यूनियन को स्थायी सदस्य बनाने का भी प्रस्ताव रखा और अफ्रीकी यूनियन को सर्वसम्मति से स्थायी सदस्य बनाया गया। इस प्रकार आज भी यह ग्रुप अपने मूल मुद्दों के साथ भविष्य की समस्याओं को ध्यान में रखकर निरंतर प्रयासरत है और अपनी संरचना के मूलभूत ढांचे को चरितार्थ कर रहा है।

जी–20 में शामिल देशों का प्रभाव

जी–20 में शामिल सभी देशो को मिलाकर जनसंख्या के आधार पर दो–तिहाई विश्व की जनसंख्या सकल घरेलू उत्पाद का 85% और व्यापार का 75% है जो की पूरे विश्व पर नियंत्रण करता है। इस ग्रुप से जुड़ा होना अपने आप में अवसर और सुधार के दृष्टिकोण से किसी भी विकासशील देश के लिए महत्वपूर्ण है। इसलिए यह भारत के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है की वह अपनी आकांक्षाओं और भविष्य की नीतियों को इस पटल पर रख कर इस माध्यम से आगे बढ़े। भारत सदैव से विविधता और संपूर्णता में विश्वास रखने वाले देशों में से है जिसके लिए सम्पूर्ण विश्व की दो–तिहाई जनता तक इस ग्रुप के माध्यम से पहुँचना आसान बन जाता है।

भारत में जी–20 शिखर सम्मेलन

01 दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक भारत इस ग्रुप का अध्यक्ष है और इसकी मीटिंग भारत से हो रही है। पहली मीटिंग की शुरुआत भारत के शेरपा व अन्य देशों के शेरपा के साथ 4–7 दिसंबर, 2022 से राजस्थान के उदयपुर शहर में आयोजित होगी। अब तक कुल 185 मीटिंग्स 65 से अधिक स्थानों पर आयोजित हो चुकी है और अंततः विराल रूप से दिल्ली में 8, 9, 10 सितंबर को सभी देशों के प्रधानों के साथ हुई जो पूर्णतया रूप से सफल रही। अगली अध्यक्षता ब्राज़ील द्वारा 01 दिसंबर, 2023 से की जाएगी।

जी–20 में भारत की भूमिका

2023 में जी–20 शिखर सम्मेलन के मेजबान के रूप में, बैठक के एजेंडे और परिणाम को आकार देने में भारत की अहम भूमिका है।

1) **वैश्विक स्तर पर**–एक तरफ जहां दुनिया के सभी देश वैचारिक रूप से रूस–यूक्रेन युद्ध को लेकर अलग–थलग पड़े हुए है, उन्हे एक साथ लाना भारत के लिए किसी उपलब्धि से

कम नहीं है इन दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने इस सम्मेलन में भाग लिया। इससे पूर्व भी इंडोनेशिया सम्मेलन में रूस ने इस सम्मेलन पर आरोप लगाया था की जी–20 सिर्फ यू.एस.ए और ई.यू. संघ की ओर केन्द्रित है।

2) **क्षेत्रीय स्तर पर** – भारत दक्षिण एशिया के लीडर के रूप में देखा जाता है ऐसे में दक्षिण–एशियाई देशों को एक साथ लाना भारत के लिए चुनौती है। फिर भी मेजबान होने के नाते भारत ने पड़ोसी देशों जैसे बांग्लादेश, यू.ए.ई आदि को आमंत्रित कर इस सम्मेलन का मान बढ़ाया।

3) **घरेलू स्तर पर**–घरेलू स्तर पर भारत में अनेकों विपक्षी पार्टियों को एक साथ लाना और अन्य समस्याओं को साथ में देखते हुए घरेलू स्तर पर इसका सफल आयोजन किसी चुनौती से कम नहीं है। हालांकि इन सब मुद्दों को साथ में समायोजित करते हुए। सफलतापूर्वक इसका आयोजन हुआ जिसमे विभिन्न प्रदेशों के मुख्यमंत्री व अन्य नेतागण भी शामिल हुए। भारत ने कुछ घरेलू मुद्दे जैसे की भ्रष्टाचार, गरीबी, सामाजिक मतभेद इन सब को एक साथ जी–20 सम्मेलन के लक्ष्य में शामिल करने की कोशिश की। कुछ मुद्दे जिन पर भारत ने इस पटल पर अपना परचम लहराया है इस प्रकार है :–

क) जलवायु नियंत्रण एवं सतत विकास : जलवायु नियंत्रण एक ऐसा मुद्दा है जिससे की सभी देश प्रभावित है और भारत ग्रीन हाउस गैस उत्पादक देशों की सूची में शामिल है। ऐसे में ऐसे मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करना और उसका समाधान ढूँढना भारत

की प्राथमिकता रही है। भारत ने इसके सतत् विकास कार्यक्रम के तहत (suitable development goods) कार्बन उपसर्जन को कैसे कम करे इस पर लक्ष्य निर्धारित कर रखा है ऐसे में सभी विकसित और विकासशील देशों को जो की जी–20 के सदस्य है, जैसे– यू.एस.ए. एवं ई.यू. ने इसकी सरहाना की है भारत के इस दिशा में कदम उठाने के लिए हाइड्रोजन पावर, सोलर पावर प्रोजेक्ट उत्कृष्ट उदाहरण है।

ख) **आर्थिक विनिमयन और आर्थिक विकास** : 75% भागीदारी जोकि जी–20 समूह के पूरे विश्व के व्यापार में है ऐसे इन मुद्दों पर ध्यान केन्द्रित करना अत्यंत आवश्यक है। भारत को विश्वगुरु बनाने की इच्छा जो की प्रधानमंत्री जी ने 2047 तक (आजादी के 100वें वर्ष) पर देखी है। जो की भविष्य में लाभकारी हो सकती है। इस प्रकार से विकसित देशों और विकासशील देशों में आपस में व्यापार को प्रोत्साहन देने का प्रयास किया।

ग) **डिजिटल अर्थव्यवस्था और प्रौद्योगिकी** : विकसित देशों ने यू. पी. आई ट्रांज़ैक्शन की सराहाना की मुख्यतः जर्मनी, यू.एस.ए.। ऐसे में विकासशील देशों को भी इस ग्रुप के माध्यम से इसको बढ़ावा देने और प्रौद्योगिकी के माध्यम से रोजगार के अवसर बढ़ाते हुए, भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने की राह भी दिखाई है।

घ) **स्वास्थ्य एवं महामारी प्रतिक्रिया** : भारत के टीकाकरण कार्यक्रम की भी सरहाना की गई और कोविड के दौरान भारत के योगदान को पूरे विश्व ने देखा जिसको विश्व मीडिया ने तवज्जो दी ऐसे में भारत की भूमिका अहम है की वो स्वास्थ्य के मुद्दे पर इन देशों का ध्यान आकर्षित करे इससे फूड सिक्योरिटी, सभी नागरिकों का स्वास्थ्य को पूर्ण रूप से भारत ने मुद्दे के रूप में उठाया और चिंतन के लिए मजबूर किया।

निष्कर्ष : इस प्रकार से यह कहा जा सकता है की भारत ने जी–20 में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और सफल आयोजन किया यह बात यू.एस.ए. के राष्ट्रपति जो बाइडेन जी के ट्वीट से भी चरितार्थ होती है जिसका सारांश कुछ इस प्रकार है आज के दौर में जब आर्थिक विकास की गति जलवायु परिवर्तन और अन्य वजहों से थपेड़े खा रही है ऐसे में जी–20 जैसे कार्यक्रम का सफल आयोजन और एक साथ ला कर इन मुद्दों पर अच्छे परिणाम प्राप्त करना, जी–20 के उद्देश्य को और उसकी आवश्यकता को पूरी करती है।

द्रव्यमान मापन के क्षेत्र में मध्यवर्ती जाँचों द्वारा परिणामों की वैधता सुनिश्चित करना

श्री अमिताभ पाण्डेय
सहायक निदेशक (तकनीकी)
निर्यात निरीक्षण अभिकरण – मुंबई प्रयोगशाला

परिचय

अंशांकन के बीच मापने और परीक्षण उपकरण की अंशांकन स्थिति में विश्वास बनाए रखने के लिए मध्यवर्ती जांच की जाती है। जब मध्यवर्ती जांच के परिणाम यह संकेत देते हैं कि मापने और परीक्षण उपकरण अब निर्दिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं, तो प्रयोगशाला या तो अंशांकन के बीच के अंतराल को कम कर देगी या अन्य उचित सुधारात्मक कार्रवाई करेगी। इस संदर्भ में, मध्यवर्ती जाँचों के बारे में उठने वाले प्रमुख प्रश्न हैं: कब, कहाँ और कैसे किया जाना चाहिए?

कब: अंशांकन के बीच, समय–समय पर मध्यवर्ती जांच की जानी चाहिए। आवधिकता को उचित तरीके से परिभाषित किया जाना चाहिए।

कहाँ: अपनी प्रयोगशाला में, उचित संदर्भ मानकों का उपयोग करते हुए।

कैसे: मध्यवर्ती जाँच करने में उपयोग की जाने वाली विधि की परवाह किए बिना, प्रक्रिया में स्वीकृति मानदंड स्थापित करना आवश्यक है। यदि मध्यवर्ती जाँच के दौरान स्वीकृति मानदंड पार हो जाता है, तो प्रयोगशाला को उचित सुधारात्मक कार्रवाई करनी चाहिए। यह प्रत्येक प्रयोगशाला पर निर्भर है कि वह इन जांचों को परिभाषित प्रक्रियाओं और अनुसूचियों के साथ–साथ स्वीकृति मानदंड स्थापित करने के अनुसार करे।

वजन के अंशांकन/सत्यापन में उपयोग किए जाने वाले मध्यवर्ती चेक

आम तौर पर, द्रव्यमान इकाई के प्रसार में वजन के अंशांकन/सत्यापन के क्षेत्र में मध्यवर्ती जांच लागू होती है। इस प्रयोजन के लिए, मध्यवर्ती जाँचों द्वारा परिणामों की वैधता सुनिश्चित करने के लिए, इसका उपयोग या तो बोर्ड विधि द्वारा भार के अंशांकन के लिए किया जा सकता है, (स्वीकृति मानदंड सामान्यीकृत त्रुटि है, *"और एन"*), या तो एक संयोजन का उपयोग करते हुए, जिसमें माप योजना में संबंधित वजन को चेक मानक के रूप में शामिल किया जाता है

(स्वीकृति मानदंड या तो सामान्यीकृत त्रुटि है,*"और एन"*, या तो एक सांख्यिकीय नियंत्रण प्रक्रिया)। के अंशांकन में इस दूसरी विधि का उपयोग किया जाता है और 1 कक्षा, जहां मैट्रिक्स डिजाइन में अतिरिक्त भार पेश किए जाने चाहिए। इस प्रकार, जाँच मानकों के लिए प्राप्त द्रव्यमान मान को संबंधित भारों के लिए मध्यवर्ती जाँच के रूप में माना जा सकता है। यदि अलग–अलग अंशांकन से प्राप्त मूल्यों की तुलना अंशांकन प्रमाणपत्र से प्राप्त मूल्यों से की जानी है, तो तथाकथित का उपयोग करके एक उपयुक्त स्वीकृति मानदंड की गणना की जा सकती है और एन कीमत।

जन तुलनित्रों के क्षेत्र में मध्यवर्ती जाँच

एक तौल उपकरण का उपयोग करने के दो तरीके हैं: प्रत्यक्ष वजन उपकरण (एक सामान्य संतुलन) के रूप में और द्रव्यमान तुलनित्र के रूप में, राष्ट्रीय द्रव्यमान मानक से द्रव्यमान इकाई के प्रसार में (मानों से प्राप्त मूल्यों के साथ) किलोग्राम का अंतर्राष्ट्रीय प्रोटोटाइप) नियमित उपयोग में मानकों के लिए। इस प्रयोजन के लिए, द्रव्यमान तुलनित्र के निम्नलिखित पैरामीटर अंशांकन प्रमाण पत्र में निर्धारित और सूचीबद्ध हैं: संवेदनशीलता और/या सबसे छोटे पैमाने के अंतराल का द्रव्यमान मूल्य, माप दोहराव के परिणाम और, यदि आवश्यक हो, भार के प्रभाव को विलक्षण रूप से रखा गया है (विलक्षणता) द्रव्यमान तुलनित्र एक अंतर वजन विधि (बोरदा–प्रतिस्थापन विधि या गॉस–ट्रांसपोज़िशन विधि) का उपयोग करके दो वज़न (द्रव्यमान मानक और परीक्षण भार) के बीच बड़े पैमाने पर अंतर देता है। मध्यवर्ती जाँचों में, सबसे महत्वपूर्ण विशेषता जिसका मूल्यांकन किया जा रहा है वह मानक विचलन है "एस" (उपयोग किए गए मापचक्रों के अनुसार निर्धारित।

NAWI के क्षेत्र में मध्यवर्ती जाँच (गैर–स्वचालित वजन उपकरण)

प्रयोगशाला की मान्यता के दायरे को देखते हुए, इन तौल उपकरणों के लिए मध्यवर्ती जांच अलग–अलग तरीकों से की जा सकती है।

4.1 NAWI के अंशांकन के लिए मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाएँ

यह देखते हुए कि NAWI का अंशांकन आम तौर पर हर 2 साल (कभी–कभी वार्षिक) में किया जाता है, मध्यवर्ती जांच अंशांकन अंतराल के मध्य बिंदु पर की जानी चाहिए। "छोटा "कैलिब्रेशन (उदाहरण के लिए तीन बिंदुओं में), यूरामेट कैलिब्रेशन गाइड के अनुसार एक अच्छा समाधान होना चाहिए। संकेत की त्रुटि से संबंधित अनिश्चितता की गणना के बाद, और एन मूल्य की गणना प्रत्येक माप बिंदु के लिए की जानी है, वास्तविक मूल्यों और अंशांकन प्रमाण पत्र से उन लोगों का उपयोग करके।

4.2 मान्यता प्राप्त चिकित्सा प्रयोगशालाएँ: चिकित्सा क्षेत्र में मध्यवर्ती जांच, प्रयोगशाला की आवश्यकताओं के आधार पर की जानी चाहिए।

4.2.1 यदि उपकरण की निरंतर समय पर जाँच नहीं की जाती है, तब अगली विधि का उपयोग किया जा सकता है: उपयुक्त सटीकता वर्ग का भार रखा जाता है "एन'' बार (आमतौर पर तीन) तवे पर, संबंधित रीडिंग प्राप्त करते हुए। इन संकेतों का औसत सीमा के भीतर होना चाहिए:

$$\bar{I} \in [M_{cst} \pm u_c]$$

कहाँ: एम सी एस टी अंशांकन प्रमाण पत्र से मानक वजन का पारंपरिक द्रव्यमान है और मेंसी मानक अनिश्चितता है जिसमें उपयोग किए गए वजन की अनिश्चितता और संबंधित माप बिंदु में संतुलन की अनिश्चितता शामिल है। यह उल्लेख किया गया है कि शेष राशि के संकेतों को कैलिब्रेटेड सर्टिफिकेट से मूल्यों के साथ ठीक किया जाएगा। यदि सुधार लागू नहीं किया जाता है, तो इसका मूल्य शेष राशि की अनिश्चितता में जोड़ा जाएगा। यह सलाह दी जाती है कि मध्यवर्ती जांच दो अन्य भारों के लिए दोहराई जाए।

4.2.2 यदि संतुलन की दैनिक जाँच की जाती है, तो उसी वजन का उपयोग करके, इसका उपयोग या तो एक नियंत्रण चार्ट, चित्र 1, या तो "का निर्धारण" किया जा सकता है पक्षपात'', तालिका 2 के अनुसार, जहाँ: पक्षपात= 100 X (प्रयोगशाला औसत मूल्य – लक्ष्य मूल्य) / लक्ष्य मूल्य।

यदि यह जानकारी उपलब्ध है, तो यह माप निर्माता के विनिर्देशन से निर्दिष्ट अनुमेय मान से कम या उसके बराबर होना चाहिए। यदि पूर्वाग्रह का न्यूनतम अनुमत मूल्य निर्माता द्वारा निर्दिष्ट नहीं किया गया है, तो प्रयोगशाला को अपना मानदंड स्थापित करना होगा। इसके अलावा, एक मानक विचलन (एसडी) का उपयोग इसकी पुनरुत्पादन के संबंध में संतुलन का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है, समय के साथ प्रक्रिया प्रदर्शन में सुधार करके भिन्नता का अध्ययन किया जाता है, चित्र 1 और 3 एसडी के विश्वास अंतराल के लिए, लगभग 99% मूल्यों को मापा जाता है ये सीमाएँ माध्य के आसपास हैं। तालिका 2 में एक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

Table 2. The evaluation of the balance using "Bias"

No. of IC	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
Measured values	10.074	10.067	10.074	10.061	10.057	10.068	10.070	10.065	10.054	10.061

Average	SD	Bias %	Target Value	-1SD	+1SD	-2SD	+2SD	-3SD	+3SD
10.065	0.010	0.001	10.065	10.058	10.072	10.051	10.079	10.045	10.086

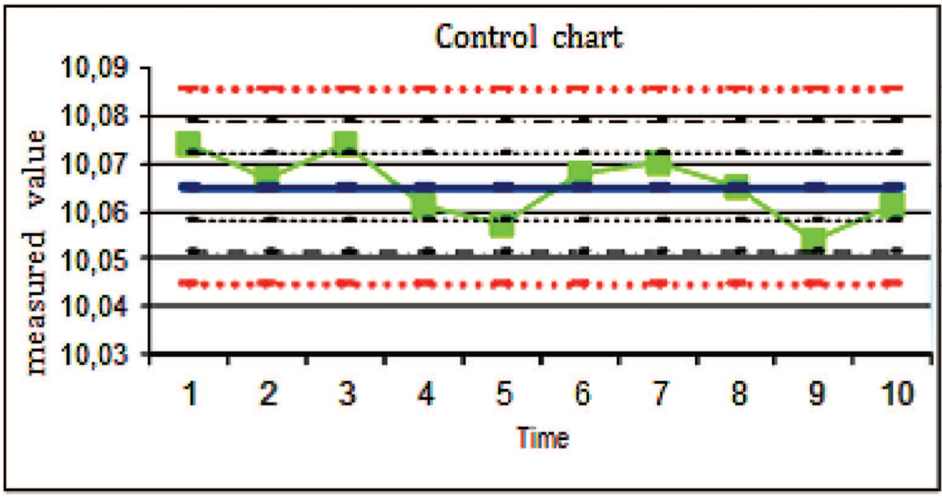

निष्कर्ष

आईएसओ/आईईसी 17025:2017 के अनुसार, परिणामों की वैधता सुनिश्चित करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियों में से एक मध्यवर्ती जांच का उपयोग है।

प्रत्येक माप उपकरण के लिए एक स्वीकृति मानदंड प्रस्तुत किया जाना है। यदि मध्यवर्ती जाँच के दौरान स्वीकृति मानदंड पार हो जाता है, तो प्रयोगशाला को उचित सुधारात्मक कार्रवाई करनी चाहिए। ये नियंत्रण प्रक्रियाएं या तो यह तय करने के लिए महत्वपूर्ण हैं कि क्या पुनर्मूल्यांकन अंतराल को बनाए रखा जा सकता है, लंबे समय तक, कम किया जा सकता है या अन्य उचित सुधारात्मक कार्रवाई की जा सकती है।

''श्वेत क्रांति''– भारत में दूध उत्पादन का स्वर्णिम युग

श्री लक्ष्मण मीना
सहायक निदेशक
निर्यात निरीक्षण अभिकरण– दिल्ली (मुख्यालय)

आज भारत सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है जहां सालाना 8.5 लाख करोड़ दूध उत्पादन होता है और वैश्विक दूध उत्पादन में 23% का योगदान देता है।

जहां जब करोड़ों किसानों की आजीविका दूध पर निर्भर है, वही दुग्ध डेरी उद्योग कृषि की एक श्रेणी और पशुपालन से जुड़ा एक बहुत लोकप्रिय व्यवसाय हो गया है। जिसके अन्तर्गत दुग्ध उत्पादन, उसकी प्रसंस्करण और खुदरा बिक्री के लिए किए जाने वाले कार्य आते हैं। उस तरह गाय–भैंसों, बकरियों या कुछेक अन्य प्रकार के पशुधन के विकास का भी काम किया जाता है। डेरी फार्मिंग के अंतर्गत दूध देने वाले मवेशियों का प्रजनन तथा देखभाल, दूध की खरीद और इसकी विभिन्न डेरी उत्पादों के रूप में प्रोसेसिंग आदि कार्य आते हैं। भारतः दूध की कमी वाले श्रेणी के देशों से बाहर निकालकर दूध उत्पादों के निर्यातक बनने में श्वेत क्रांति महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

भारत में डेयरी क्षेत्र का विकास और श्वेत क्रांति को सफल बनाने में डेयरी सहकारी समितियों द्वारा निभाया गया योगदान काबिल–ए–तारीफ है जिसकी भूमिका आजादी के बाद देश की उल्लेखनीय विकास की कहानी का एक अभिन्न अंग है। आज, भारत दुनिया में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक है, जबकि 1950 और 1960 के दशक के दौरान, स्थिति मौलिक रूप से भिन्न थी। भारत एक दूध की कमी वाला देश था जो आयात पर निर्भर था और वार्षिक उत्पादन वृद्धि कई वर्षों से नकारात्मक थी। आजादी के बाद के पहले दशक के दौरान दूध उत्पादन में वार्षिक चक्रवृद्धि वृद्धि दर 1.64% थी, जो 1960 के दशक में घटकर 1.15% हो गई थी। 1950–51 में देश में प्रति व्यक्ति दूध की खपत मात्रा 124 ग्राम प्रतिदिन थी जो की 1970 तक, गिरकर 107 ग्राम प्रति दिन हो गया, जो दुनिया में सबसे कम और न्यूनतम अनुशंसित पोषण मानकों से काफी नीचे था। भारत का डेयरी उद्योग जीवित रहने के लिए अंतिम संघर्ष कर रहा था। भारत में विश्व के मवेशियों की सबसे बड़ी आबादी होने के बावजूद देश में प्रतिवर्ष 21 मिलियन टन से भी कम दूध का उत्पादन होता था। 1964 में गुजरात के आणंद जिले में दिवंगत प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री की यात्रा के बाद, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (एनडीडीबी) को 1965 में देश भर में डेयरी सहकारी समितियों के 'आनंद पैटर्न' के निर्माण का समर्थन करने के लिए बनाया गया और ऑपरेशन फ्लड (श्वेत क्रांति) कार्यक्रम के माध्यम से जिसे चरणों में लागू किया गया।

'आनंद पैटर्न' अनिवार्य रूप से एक सहकारी संरचना है जिसमें ग्राम–स्तरीय डेयरी सहकारी समितियां (डीसीएस) शामिल थीं, जो जिला–स्तरीय यूनियनों को बढ़ावा देती हैं, जो बदले में राज्य–स्तरीय विपणन संघ को बढ़ावा देती हैं। 1970 में शुरू, एनडीडीबी ने पूरे भारत में ओएफ कार्यक्रम के माध्यम से आनंद पैटर्न सहकारी समितियों की बढ़ोतरी की।

भारत में "श्वेत क्रांति के जनक" के रूप में व्यापक रूप से प्रसिद्ध डॉ. वर्गीज कुरियन, एनडीडीबी के पहले अध्यक्ष थे। अपनी टीम के साथ, डॉ. कुरियन ने परियोजना के शुभारंभ पर काम शुरू किया, जिसमें देश भर के दुग्धशालाओं में आनंद–पैटर्न सहकारी समितियों के संगठन की परिकल्पना की गई थी, जहाँ से दूध सहकारी समितियों द्वारा उत्पादित और खरीदे गए तरल दूध को शहरों में पहुँचाया जाएगा।

अमूल्य आदमी डॉ. वर्गीज कुरियन की प्रेरक कहानी जिसने भारत को दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक बना दिया।

दिवंगत प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री की आनंद यात्रा के बाद ऑपरेशन फ्लड को निम्नलिखित चरणों में लागू किया गया थाः–

1. **प्रथम चरण–(1970–1980)** को विश्व खाद्य कार्यक्रम के माध्यम से यूरोपीय संघ (तब यूरोपीय आर्थिक समुदाय) द्वारा दान किए गए स्किम्ड मिल्क पाउडर और मक्खन तेल की बिक्री द्वारा वित्तपोषित किया गया था।

2. **द्वितीय चरण–(1981–1985)** में दुग्धशालाओं को 18 से बढ़ाकर 136 कर दिया; शहरी बाजारों ने दूध के आउटलेट का विस्तार 290 तक कर दिया। 1985 के अंत तक, 4,250,000 दूध उत्पादकों के साथ 43,000 ग्राम सहकारी समितियों की एक आत्मनिर्भर प्रणाली को बढ़ाया गया।

3. **तृतीय चरण–(1985–1996)** ने डेयरी सहकारी समितियों को दूध की बढ़ती मात्रा की खरीद और बाजार के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे का विस्तार और मजबूत करने में सक्षम बनाया। इस चरण में 30000 नई डेयरी सहकारी समितियों को जोड़ा गया जिससे इनकी संख्या कुल 73000 हो गई।

ऑपरेशन फ्लड ने राष्ट्रीय दूध ग्रिड के माध्यम से 700 कस्बों और शहरों में उपभोक्ताओं तक गुणवत्तापूर्ण दूध पहुंचाने में मदद की। कार्यक्रम ने बिचौलियों की आवश्यकता को दूर किया। इस तरह सहकारी ढांचे ने दूध और दुग्ध उत्पादों के उत्पादन और वितरण की पूरी कवायद को किसानों के लिए आर्थिक रूप से व्यवहार्य बना दिया। इसने आयातित दूध के ठोस पदार्थों पर भारत की निर्भरता को भी समाप्त कर दिया। देश न केवल अपनी स्थानीय डेयरी जरूरतों को पूरा करने के लिए सुसज्जित हो गया बल्कि इसने कई देशों में दूध पाउडर का निर्यात भी शुरू कर दिया। क्रॉस ब्रीडिंग के कारण दुधारू पशुओं के आनुवंशिक सुधार में भी वृद्धि हुई है। जैसे–जैसे डेयरी उद्योग का आधुनिकीकरण और विस्तार हुआ, लगभग 10 मिलियन किसानों ने डेयरी फार्मिंग से अपनी आय अर्जित करना शुरू कर दिया।

1950–51 में दूध का उत्पादन महज 17 मिलियन टन (एमटी) था। 1968–69 में, ऑपरेशन फ्लड की शुरुआत से पहले, दूध का उत्पादन केवल 21.2 मीट्रिक टन था जो 1979–80 तक बढ़कर 30.4 मीट्रिक टन, 1989–90 तक 51.4 मीट्रिक टन और 2020–21 तक 209.96 मीट्रिक टन हो गया। तीन दशकों (1980, 1990 और 2000 के दशक) में, देश में दैनिक दूध की खपत 1970 में प्रति व्यक्ति 107 ग्राम से बढ़कर 2020–21 में प्रति व्यक्ति 427 ग्राम हो गई।

ऑपरेशन फ्लड के बाद, भारतीय डेयरी और पशुपालन क्षेत्र बड़ी संख्या में ग्रामीण परिवारों के लिए आय के प्राथमिक स्रोत के रूप में उभरा – उनमें से ज्यादातर भूमिहीन, छोटे या सीमांत किसान हैं। आज भारत लगभग ढाई दशकों से विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश होने के गौरव का स्थान रखता है।

पिछले दो दशकों में भारत का दुग्ध उत्पादन दोगुना हो गया है। इसका श्रेय 'अमूल' नामक एक प्रसिद्ध महासंघ को भी जाता है, जिसे गुजरात में 36 लाख दूध उत्पादकों ने बनाया था। किसानों की रोजी–रोटी में सुधार के लिए अमूल ने भी 'ऑपरेशन फ्लड' की तर्ज पर अपना सफर तय किया। छोटे डेयरी किसानों को अपनी आजीविका कमाने में मदद करने से प्रति घर दूध का उत्पादन दोगुना हो गया है।

डेयरी क्षेत्र भारत के लिए विभिन्न कारणों से काफी महत्व रखता है। एक उद्योग के रूप में, यह 80 मिलियन से अधिक ग्रामीण परिवारों को रोजगार देता है, जिनमें से अधिकांश छोटे और सीमांत किसानों के साथ–साथ भूमिहीन हैं। सहकारी समितियों ने न केवल किसानों को आत्मनिर्भर बनाया है बल्कि लिंग, जाति, धर्म और समुदाय की बेड़ियों को भी तोड़ा है। महिला उत्पादक देश में डेयरी क्षेत्र का प्रमुख कार्यबल हैं। यह क्षेत्र विशेष रूप से महिलाओं के लिए एक महत्वपूर्ण नौकरी प्रदाता है, और महिला सशक्तिकरण में अग्रणी भूमिका निभाता है।

सरकार द्वारा कई उपायों के साथ–साथ डेयरी विकास में निजी क्षेत्र की बढ़ती भूमिका के साथ, आने वाले दशकों में भारत में दूध उत्पादन और दूध प्रसंस्करण में अपनी वृद्धि को बनाए रखने की उम्मीद है। विश्व खाद्य के रूप में दूध के महत्व को स्वीकार करने और डेयरी क्षेत्र का जश्न मनाने के लिए संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) द्वारा 2001 से हर साल 1 जून को विश्व दुग्ध दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारत में, 26 नवंबर को डॉ वर्गीज कुरियन के जन्मदिन को राष्ट्रीय दुग्ध दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्वेत क्रांति' विश्व के सबसे बड़े ग्रामीण विकास कार्यक्रमों में से एक है।

भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में डेयरी क्षेत्र का प्रमुख योगदान रहा है। सरकार ने अपनी पहलों जैसे राष्ट्रीय डेयरी योजना के विकास, इस क्षेत्र के लिए एक सतत विकास–केंद्रित ढांचे के साथ–साथ जन धन योजना और स्टार्ट–अप इंडिया पहल जैसी सामान्य

सशक्तिकरण योजनाओं के माध्यम से डेयरी फार्मिंग के बुनियादी ढांचे की सुविधा प्रदान की है। पिछले आठ वर्षों में, पशुपालन और डेयरी क्षेत्र को माननीय प्रधानमंत्री मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के दृष्टिकोण के तहत काफी प्रोत्साहन मिला है और इस क्षेत्र की यात्रा वास्तव में आत्मनिर्भरता का एक उल्लेखनीय प्रतिबिंब है। हाल ही में, माननीय प्रधानमंत्री ने ग्रेटर नोएडा में इंडिया एक्सपो सेंटर और मार्ट में इंटरनेशनल डेयरी फेडरेशन वर्ल्ड डेयरी समिट (IDF WDS) 2022 का उद्घाटन किया।

इस तरह का अंतिम डेयरी शिखर सम्मेलन भारत में लगभग आधी सदी पहले 1974 में आयोजित किया गया था। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को ग्रेटर नोएडा में इंडिया एक्सपो सेंटर और मार्ट में इंटरनेशनल डेयरी फेडरेशन वर्ल्ड डेयरी समिट (IDF WDS) 2022 का उद्घाटन किया। चार दिवसीय आईडीएफ डब्ल्यूडीएस 2022, 12 सितंबर से 15 सितंबर तक आयोजित किया गया, यह वैश्विक और भारतीय डेयरी हितधारकों का एक समूह है, जिसमें उद्योग जगत के नेता, विशेषज्ञ, किसान और नीति योजनाकार शामिल हुए, जो 'पोषण और आजीविका के लिए डेयरी' के विषय पर केंद्रित था। आईडीएफ डब्ल्यूडीएस 2022 में 50 देशों के लगभग 1500 प्रतिभागियों के भाग लिया।

इस आयोजित शिखर सम्मेलन की प्रमुख विशेषताएं नीचे निम्नलिखित हैः–

- पोषण और आजीविका के लिए डेयरी भूमिका।
- पशु आधार योजना : आधुनिक तकनीक की मदद से 'एनिमल बेस' योजना के तहत पशुओं की बायोमेट्रिक पहचान करना।
- डेयरी जानवरों का डेटाबेस : भारत डेयरी पशुओं का सबसे बड़ा डेटाबेस बना रहा है और डेयरी क्षेत्र से जुड़े हर जानवर को टैग करना।
- 'पशुधन' की अवधारणा और दूध से जुड़े व्यवसाय।
- भारत डेयरी पशुओं का सबसे बड़ा डेटाबेस बनाना और डेयरी क्षेत्र से जुड़े हर जानवर को टैग करना।
- कृषि और डेयरी क्षेत्र में 1,000 से अधिक स्टार्टअप स्थापित करना।
- भारतीय डेयरी उद्योग पर डेटा तैयार करना।

"अपने प्रयोजन में दृढ़विश्वास रखने वाला एक सूक्ष्म शरीर इतिहास के रुख को बदल सकता है।" –महात्मा गाँधी

शहद के फायदे, गुण, स्वास्थ्य लाभ, उपयोग और असली - नकली शहद की पहचान

डॉ. नीरज प्रफुल्ल अवस्थी
सहायक निदेशक,
निर्यात निरीक्षण अभिकरण, मुंबई

शहद या मधु हमेशा से रसोई में इस्तेमाल होने वाला एक स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ रहा है, साथ ही सदियों से एक महत्वपूर्ण औषधि के रुप में भी उसका इस्तेमाल होता है। दुनिया भर में हमारे पूर्वज शहद के कई लाभों से अच्छी तरह परिचित थे। एक औषधि के रूप में उसका इस्तेमाल सबसे पहले सुमेरी मिट्टी के टेबलेटों में पाया गया है जो करीब 4000 साल पुराने हैं। लगभग 30 फीसदी सुमेरी चिकित्सा में शहद का इस्तेमाल होता था। भारत में शहद सिद्ध और आयुर्वेद चिकित्सा का एक महत्वपूर्ण अंग है जो चिकित्सा की पारंपरिक पद्धतियां हैं। प्राचीन मिस्र में इसे त्वचा और आंखों की बीमारियों में इस्तेमाल किया जाता था और जख्मों तथा जलने के दागों पर प्राकृतिक बैंडेज के रूप में लगाया जाता था। आजकल चिकित्सा समुदाय में शहद पर काफी वैज्ञानिक शोध चल रहा है जो हमारे पूर्वजों द्वारा सोचे गए शहद के तमाम प्रयोगों की जांच कर के उन्हें पुष्ट कर रहा है। इनमें से कुछ पर नजर डालते हैं:

- **शहद चीनी से कम नुकसानदायक है**

शरीर पर सफेद चीनी के हानिकारक प्रभावों के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। शहद उसका एक बढ़िया विकल्प है जो उतना ही मीठा है मगर उसका सेवन अहानिकर है। हालांकि शहद के रासायनिक तत्वों में भी सिंपल शुगर होती है मगर वह सफेद चीनी से काफी भिन्न होती है। उसमें करीब 30 फीसदी ग्लूकोज और 40 फीसदी फ्रक्टोज होता है यानि दो मोनोसेकाराइड या सिंपल शुगर और 20 फीसदी दूसरे कांप्लेक्स शुगर होते हैं। शहद में एक स्टार्ची फाइबर डेक्सट्रिन भी होता है। यह मिश्रण शरीर में रक्त शर्करा का स्तर संतुलित रखता है।

- **शहद एंटीबैक्टीरियल और एंटीसेप्टिक है**

शहद का सेवन लाभदायक एंटीऑक्सीडेंट तत्वों की संख्या को बढ़ाता है, शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को बेहतर बनाता है और हानिकारक सूक्ष्मजीवों से लड़ता है। कई अध्ययनों में जख्मों की चिकित्सा में भी शहद के इस्तेमाल पर विचार किया गया है। एक अध्ययन में एक उपचारात्मक शहद का इस्तेमाल किया गया जो एक खास शुद्धिकरण प्रक्रिया से गुजरा था। इस अध्ययन में भाग लेने वाले सभी लोगों के जख्मों से सारा बैक्टीरिया नष्ट हो गया। एक और अध्ययन में असंसाधित

(अनप्रोसेस्ड) शहद के इस्तेमाल से 59 मरीजों के जख्म और पैर के अल्सर ठीक हो गए। इन मरीजों में से 80 फीसदी पर पारंपरिक उपचार का कोई असर नहीं हुआ था। एक मरीज को छोड़कर बाकी सभी के जख्मों में सुधार हुआ। साथ ही शहद लगाने के एक सप्ताह के भीतर संक्रमित जख्म जीवाणुरहित हो गए। पारंपरिक चिकित्सा में, शहद के एक लाभ में श्वास संबंधी संक्रमणों का उपचार शामिल है।

क्लीनिकल रिसर्च से यह भी पता चला है कि मेडिकल ग्रेड शहद भोजन से पैदा होने वाले जीवाणुओं जैसे इशटीशिया कोली और सेलमोनेला को नष्ट कर सकता है। शहद उन बैक्टीरिया से लड़ने में भी प्रभावकारी साबित हुआ है, जिन पर एंटीबायोटिक्स का असर नहीं होता। शहद कई स्तरों पर संक्रमण से लड़ता है जिससे वह जीवाणुओं के लिए प्रतिरोधी क्षमता विकसित करना मुश्किल बना देता है। इसके विपरीत एंटीबायोटिक्स बैक्टीरिया पर उस समय हमला करते हैं, जब वे विकसित हो रहे होते हैं इससे वे उसे प्रतिरोधी क्षमता विकसित करने का मौका देते हैं।

• गले की खराश में शहद का इस्तेमाल

गले की खराश को दूर करने में शहद आपके काम आ सकता है। ऐसे में अब रात को सोने से पहले एक चम्मच शहद का सेवन करें। इसके साथ–साथ आप अदरक का रस भी मिला सकते हैं। ऐसा करने से न केवल खराश की समस्या दूर होगी बल्कि गले की समस्या से राहत मिलेगी।

• शहद पाचन में मदद करता है

शहद कब्ज, पेट फूलने और गैस में लाभकारी होता है क्योंकि यह एक हल्का लैक्सेटिव है। शहद में प्रोबायोटिक या सहायक बैक्टीरिया भी प्रचुर मात्रा में होते हैं जो पाचन में मदद करते हैं, प्रतिरक्षा प्रणाली को बेहतर बनाते हैं और एलर्जी को कम करते हैं। टेबल शुगर की जगह शहद का इस्तेमाल आंतों में फंगस से पैदा हुए माइकोटॉक्सिन के विषैले प्रभावों को कम करता है।

• आयुर्वेद और सिद्ध चिकित्सा में शहद का इस्तेमाल

शायद किसी ने शहद के लाभों को इतनी गहराई में नहीं खोजा है, जितना कि भारतीयों ने। शहद मानवजाति के लिए प्रकृति का उपहार माना गया और उसे हर रसोईघर का एक अनिवार्य अंग समझा गया। 12 महीने से ज्यादा उम्र के किसी भी व्यक्ति के लिए उसे आहार का एक अहम हिस्सा माना गया। शहद को एक सुपाच्य खाद्य पदार्थ माना जाता था जिसे इंसान आसानी से पचा सकते हैं। आयुर्वेद और सिद्ध दोनों पद्धतियों में शहद का एक इस्तेमाल औषधियों के एक वाहक के रूप में किया गया। शहद के साथ मिलाने पर औषधि आसानी से और तेजी से शरीर में समा जाती है और रक्त प्रवाह के द्वारा पूरे शरीर में फैल जाती है। कहा जाता है कि शहद किसी औषधि की क्षमता को भी बरकरार रखती है और उसके असर को लंबा करती है।

सिद्ध ग्रंथों में ऊष्णता संबंधी समस्याओं, अत्यधिक कफ, उल्टी, गैस समस्याओं और रक्त में अशुद्धियों के उपचार के अंग के रूप में शहद को लेने का सुझाव दिया गया है। सिद्ध ग्रंथों में सात अलग–अलग तरह के शहद की पहचान की गई है, जिसमें घने पहाड़ी वनों, जिन्हें मलयतन या पहाड़ी शहद कहा जाता है, से एकत्रित शहद को सबसे ज्यादा औषधीय महत्व का माना जाता है। इस शहद में कई औषधीय पौधों के गुण होते हैं, जिनसे मधुमक्खियां रस या पराग लेती हैं।

असली और नकली शहद की पहचान करने के अचूक तरीके

मिलावट के इस दौर में नकली और असली शहद की पहचान होना बहुत जरूरी है। ऐसे 6 तरीके बता रहे हैं, जिनका इस्तेमाल करके आप असली और नकली शहद की पहचान कर सकते हैं।

• गर्म पानी बता देगा असली–नकली शहद

शहद को पहचानने का सबसे बढ़िया और आसान तरीका गर्म पानी है। इसके लिए कांच की गिलास या कटोरी में गर्म पानी भर लें। इसमें एक चम्मच शहद डालें। अगर यह पानी में घुल जाता है तो समझिए शहद मिलावटी है। वहीं अगर यह मोटी तार बनाता हुआ बर्तन की तली में बैठ जाता है, तो यह असली है। मिलावटी शहद बनाने के लिए चीनी या गुड़ का इस्तेमाल किया जाता है। जिससे यह पानी में घुल जाता है।

• टिश्यू या ब्लोटिंग पेपर से पहचानें शहद

शहद की शुद्धता की जांच ब्लोटिंग या टिश्यू पेपर से भी की जा सकती है। इसके लिए ब्लोटिंग

पेपर या टिश्यू पर शहद की एक–एक बूंद डालें। अगर शहद में पानी की मिलावट होगी, तो उसे पेपर सोख लेगा जबकि शुद्ध शहद पेपर पर ही जमा रहेगा।

- **ब्रेड से पहचानें शहद**

शहद के टेस्ट में ब्रेड भी शहद के असली–नकली खेल को पकड़ लेगी। शुद्ध शहद ब्रेड पर डालने से वह कठोर हो जाएगी जबकि मिलावटी शहद ब्रेड पर लगाने से नरम और गीली हो जाएगी।

- **अंगूठे से करें शहद की जांच**

शहद की एक बूंद अंगूठे और उंगली के बीच रखें। इससे तार बनाने की कोशिश करें। अगर शहद शुद्ध होगा, तो इसमें मोटी तार बनेगी। साथ ही शुद्ध शहद अंगूठे पर ही जमा रहेगा जबकि मिलावटी शहद फैल जाएगा।

- **पानी–सिरका से करें टेस्ट**

कांच की गिलास या कटोरी में एक बड़ा चम्मच शहद, 2–3 बूंद सिरका और थोड़ा–सा पानी डालकर मिला लें। 2–3 मिनट तक देखेंगे, तो इसमें से झाग उठने लग जाएगा। ऐसे में समझें कि शहद में मिलावट है।

- **माचिस की तीली/कॉटन बड से करें टेस्ट**

शुद्ध शहद, किसी भी प्रकार की गर्मी या हीट के संपर्क में आने पर जलना नहीं चाहिए। इस टेस्ट को करने के लिए माचिस की तीली/कॉटन बड को शहद में डुबाकर जलाएं। अगर यह जलता है, तो इसका मतलब है कि आपका शहद मिलावटी है। वहीं शुद्ध शहद ठीक से नहीं जलेगा।

बाकी है

श्री विकास दहिया
तकनीकी अधिकारी
निनिप

कितने लम्हे तो जी लिए, कितने सारे लम्हे बाकी
थोड़ा खोया, ज्यादा पाया, अब क्या मिलना बाकी।
कुछ इच्छाएं चली गयी कुछ चली जानी बाकी
जो इच्छाएं मन में है, वो पूरी करनी बाकी है।

मेरी भाग दौड़ की जिंदगी है, कभी होश, कभी मदहोश
जीवन अच्छा बीता है, और दिल में संतोष है।
मेरी खुशियाँ ही मेरे सपने है, मेरे अपने मेरे अपने
बस यूं ही जीवन बीता जाये, यूं ही साँसे चलती जाए
जब भी देखू पीड़ा औरों की, यूं ही आखें नम होती जाती।

कुछ तो दीपक जला दिए, कुछ अभी जलने बाकी
मन के अंदर छुपे हुए, कुछ सवालों के जवाब बाकी।
माना जिंदगी का सफर आसान नहीं, काँटो पे चलना बाकी
पंख लगा के उम्मीदों के, एक और उड़ान अभी बाकी।
सही गलत की फिक्र नहीं कभी, बस अंत तक चलना बाकी
कितने लम्हे तो जी लिए, कितने सारे लम्हे बाकी।

भारतीय संदर्भ में खाद्य सुरक्षाः इसका महत्व और इसके घटक

श्री चिराग गाडी
तकनीकी अधिकारी
निर्यात निरीक्षण परिषद

भारत विश्व की सबसे तेज़ी से विकास करती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और हाल के वर्षों में देश ने उल्लेखनीय आर्थिक विकास किया है। लेकिन भारतीय अर्थव्यवस्था की विभिन्न उपलब्धियों के बावजूद, गरीबी और खाद्य असुरक्षा की स्थिति अभी भी चिंता का विषय है। खाद्य या आहार को किसी व्यक्ति के भरण–पोषण, विकास और वृद्धि के लिये मूलभूत आवश्यकता माना जाता है।

खाद्य सुरक्षा क्या है?

खाद्य सुरक्षा का अर्थ है कि देश में हर व्यक्ति को सदैव पर्याप्त, स्वस्थ और पोषण से भरपूर खाद्य सामग्री की उपलब्धता, पहुँच और उसे प्राप्त करने का सामर्थ्य। इसकी अधिकारिक परिभाषा यह है कि एक व्यक्ति, एक परिवार या एक समुदाय की खाद्य सामग्री की पहुंच, प्राप्ति, उपयोग और उपलब्धता का विश्वास योग्य, स्थिर और सुरक्षित होना चाहिए।

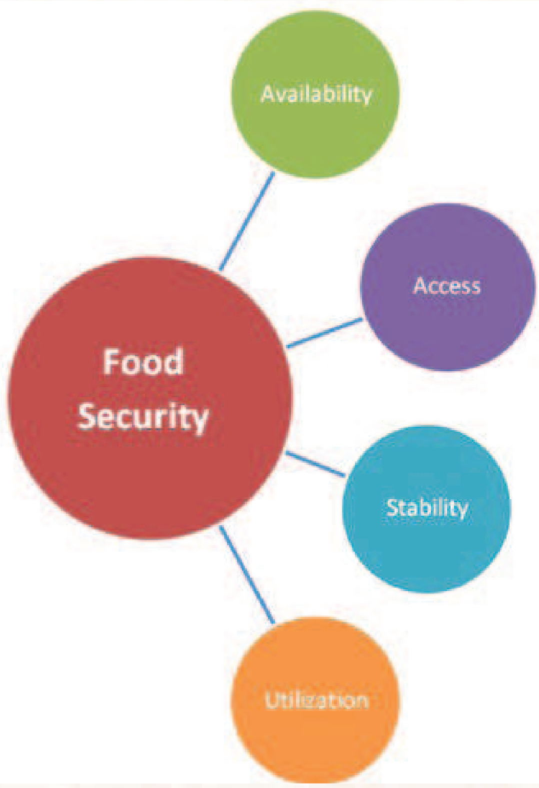

खाद्य सुरक्षा (Food Security) की अवधारणा बहुआयामी है। जीवन के लिये खाद्य उतना ही आवश्यक है, जितना सांस लेने के लिए हवा। लेकिन खाद्य सुरक्षा का अर्थ दो वक्त भोजन प्राप्त होने तक ही सीमित नहीं है। इसके निम्नलिखित आयाम हैं:

- **उपलब्धता** (Availability) जिसका अर्थ है कि देश में खाद्यान्न का उत्पादन, खाद्य का आयत एवं सरकारी अन्न भंडारों में अन्न की उपलब्धता।

- **अभिगम्यता या पहुँच** (Accessibility) का अर्थ है कि देश के प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव के अन्न या खाद्यान्न पहुचना और;
- **वहनीयता** (Affordability) का मतलब है की आहार संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्याप्त, सुरक्षित और पौष्टिक खाद्य खरीदने के लिये व्यक्ति के पास पर्याप्त धन होना।

इस प्रकार, किसी देश में खाद्य सुरक्षा तभी सुनिश्चित होती है जब सभी के लिये पर्याप्त खाद्य उपलब्ध हो, सभी के पास स्वीकार्य गुणवत्ता का खाद्य खरीदने का साधन हो और खाद्य तक पहुँच में कोई बाधा न हो।

वर्तमान भारत में खाद्य सुरक्षा के लिये कोई स्पष्ट संवैधानिक प्रावधान नहीं है। सरकार द्वारा खाद्य सुरक्षा के लिए दो महत्वपूर्ण घटक है जो की बफर स्टॉक और सार्वजानिक वितरण प्रणाली हैं।

- **बफर स्टॉक** का अर्थ है सुरक्षित भंडार जो भारतीय खाद्य निगम का मुख्य उत्तरदायित्व है। भारतीय खाद्य निगम अधिशेष उत्पादन वाले राज्यों में किसानो से न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) पर खाद्यान्न की खरीद कर और विभिन्न स्थानों पर अवस्थित अपने गोदामों में इन्हें संग्रहीत रखता है तथा वहाँ से आवश्यकता के अनुसार राज्य सरकारों को इसकी आपूर्ति की जाती है।
- **सार्वजनिक वितरण प्रणाली:** भारत सरकार द्वारा देश में खाद्य अर्थव्यवस्था के प्रबंधन के लिए सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) नीति बनाई गयी है जो कि देश की खाद्य सुरक्षा का महत्वपूर्ण अंग है। भारत में राशन की दुकानों के माध्यम से PDS के तहत वर्तमान में गेहूं, चावल, चीनी, तेल व अन्य खाद्यान्न का वितरण गरीब वर्ग के लोगों को किया जाता है।

5 जुलाई, 2013 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए), 2013 को पारित किया गया था। यह खाद्य सुरक्षा के प्रति दृष्टिकोण में एक आमूलचूल परिवर्तन को इंगित करता है जहाँ अब यह कल्याण (welfare) के बजाय अधिकार–आधारित दृष्टिकोण (rights-based approach) में बदल गया है।

इस अधिनियम के अनुसार, लक्षित सार्वजनिक वितरण प्रणाली ग्रामीण आबादी के 75% तक और शहरी आबादी के 50% तक सब्सिडी वाले खाद्यान्न प्रदान कर सकती है।

एनएफएसए के अंतर्गत गरीब परिवारों को अंत्योदय अन्न योजना व प्राथमिकता वाले परिवार योजना के तहत राशन की दुकानों से खाद्यान्न वितरित किया जाता है।

एनएफएसए के अंतर्गत विशेष प्रावधान किया गया है, जैसे कि राशन कार्ड जारी करने के मामले में परिवार की 18 वर्ष या उससे अधिक आयु की सबसे बड़ी आयु की महिला का घर की

मुखिया होना अनिवार्य है। इसके अलावा, अधिनियम में 6 माह से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिये विशेष प्रावधान किया गया है, जहाँ उन्हें एकीकृत बाल विकास सेवा (Integrated Child Development Services-ICDS) केंद्रों के व्यापक नेटवर्क के माध्यम से निःशुल्क पौष्टिक आहार प्रदान करना सुनिश्चित किया गया है।

भारत में खाद्य सुरक्षा से संबंधित प्रमुख चुनौतियाँ

भारत में खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने के लिए कुछ चुनौतियाँ का सामना करना पड़ रहा है जैसे किः

- **मृदा स्वास्थ्य में गिरावटः** खाद्य उत्पादन का एक प्रमुख तत्त्व है स्वस्थ मृदा, क्योंकि वैश्विक खाद्य उत्पादन का लगभग 95% भाग मृदा पर ही निर्भर करता है। कृषि–रसायनों के अत्यधि‍क या अनुचित उपयोग, वनों की कटाई और प्राकृतिक आपदाओं के कारण मृदा का क्षरण संवहनीय खाद्य उत्पादन के लिये एक महत्वपूर्ण चुनौती है। पृथ्वी की लगभग एक तिहाई मृदा पहले ही क्षरित हो चुकी है।
- आक्रामक खरपतवार के कारण देश में कई फसलों को नष्ट किया है।
- **कुशल प्रबंधन ढाँचे का अभावः** भारत में खाद्य सुरक्षा के लिये सुदृढ़ प्रबंधन ढाँचे का अभाव है। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को खाद्यान्नों के लीकेज एवं डायवर्जन, समावेशन/बहिष्करण त्रुटियाँ, नकली एवं फर्जी राशन कार्ड और कमज़ोर शिकायत निवारण जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
- **जलवायु परिवर्तन :** वर्षा के पैटर्न में आ रहे बदलाव और ग्रीष्म लहर (heat waves), बाढ़ जैसी चरम मौसमी घटनाओं की बढ़ती आवृत्ति एवं तीव्रता से भारत में कृषि उत्पादकता कम हो रही है, जिससे खाद्य सुरक्षा के लिये गंभीर खतरा उत्पन्न हुआ है।

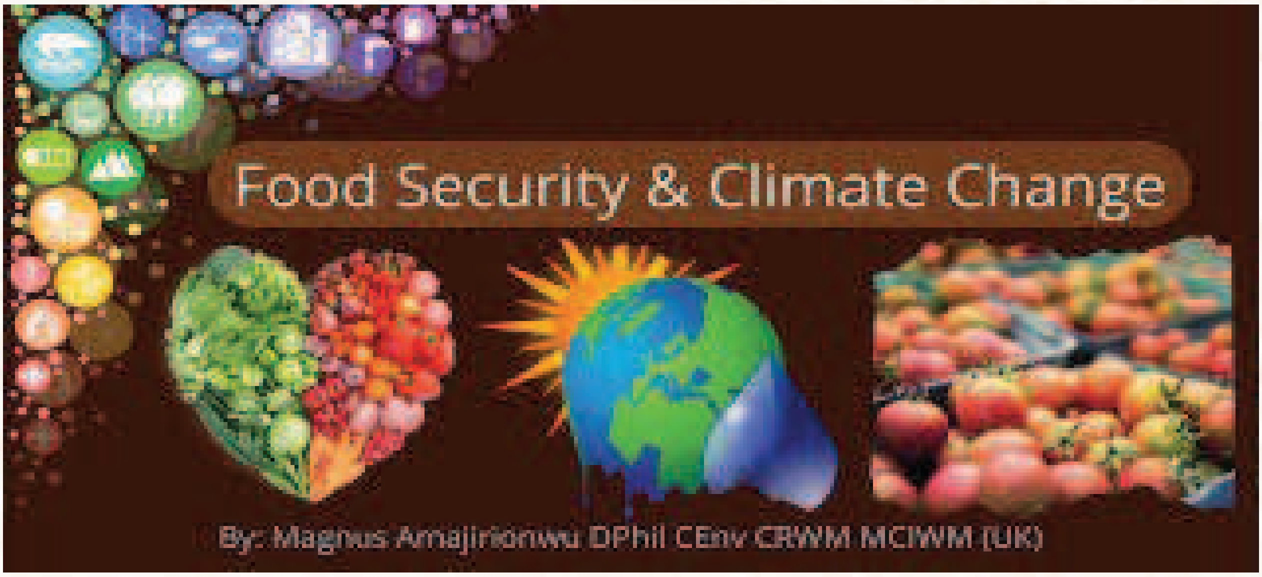

- अस्थिर वैश्विक व्यवस्था के कारण आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधानः वर्ष 2020 में कोविड–19 महामारी के कारण पहले ही प्रभावित रहे वैश्विक खाद्य आपूर्ति को वर्ष 2022 में रूस–यूक्रेन युद्ध के कारण व्यवधान का सामना करना पड़ा है और इसके परिणामस्वरूप खाद्य की कमी और खाद्य मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न हुई है।

आगे की राह

भारत में खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संवहनीय खेती की ओर आगे बढ़ना, परिशुद्ध कृषि की ओर आगे बढ़ना चाहिए। इसके अलावा, खाद्यान्न बैंकों को ब्लॉक/ग्राम स्तर पर स्थापित किया जा सकता है, जिससे लोगों को फूड कूपन के आधार पर सब्सिडी युक्त खाद्यान्न प्राप्त हो सकता है।

फूड स्टॉक होल्डिंग्स में पारदर्शिता सुनिश्चित करनाः किसानों के साथ संचार चैनलों को बेहतर बनाने के लिये सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करने से उन्हें अपनी उपज का बेहतर सौदा करने में मदद मिल सकती है, जबकि नवीनतम तकनीक के साथ भंडारण घरों में सुधार करना प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिये समान रूप से महत्वपूर्ण है।

अंत में, मुद्दों को संबोधित करने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाना होगा, जिससे भारत एक स्थायी हरित अर्थव्यवस्था की ओर आशापूर्ण कदम बढ़ा सकता है।

निष्कर्ष

यदि एक देश में उसके सभी निवासियों के लिए पर्याप्त पौष्टिक भोजन उपलब्ध है, यदि हर कोई इसे उचित मूल्य पर प्राप्त कर सकता है, और यदि इसे प्राप्त करने में कोई बाधा नहीं है, तो किसी देश को पर्याप्त खाद्य सुरक्षा माना जाता है।

पर्यावरण संरक्षण स्वस्थ जीवन के लिए बेहद आवश्यक

श्री शेखरानन्द,
क. हिंदी अनुवादक
निनिप, नई दिल्ली

हर साल 5 जून को 'पर्यावरण दिवस' के रूप में पूरे विश्व में व्याप्त तरह–तरह के प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए कारगर प्रयासों पर मंथन एवं विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते है। भविष्य में पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण करने के लिए बेहद आवश्यक कदमों पर अमल करने के उद्देश्य से उसकी रूपरेखा बनाने के लिए नीति निर्माताओं के साथ–साथ आम जनता को जागरूक करने के लिए सम्पूर्ण विश्व में हर वर्ष पर्यावरण संरक्षण दिवस के रूप में मनाया जाता है। वैसे भी इस दिवस को शुरुआत में मनाने की घोषणा संयुक्त राष्ट्र महासंघ ने पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति वैश्विक स्तर पर सभी देशों के आम जनमानस में राजनीतिक और सामाजिक जागृति लाने के उद्देश्य से वर्ष 1972 में की थी। इसे 5 जून से 16 जून तक संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन में चर्चा के बाद शुरू किया गया था। उसके बाद ही विश्व में 5 जून 1974 को पहला 'विश्व पर्यावरण दिवस' मनाया गया था। लेकिन सोचने वाली बात यह है कि फिर भी आज विश्व के अधिकांश देशों में बढ़ता प्रदूषण वर्तमान समय की स्थिति बेहद गंभीर ज्वंलत समस्या बन गई है।

विश्व में हर तरफ छिड़ी विकास की अंधाधुंध अव्यवस्थित दौड़ ने जगह–जगह प्रदूषण फैलाने में अपना योगदान देकर हमारी भूमि, जलवायु को प्रदूषित करके हर तरफ आबोहवा को खराब करने का काम किया है। आज हमारे देश भारत में भी हर तरह का प्रदूषण अपने चरम स्तर पर है, हालांकि देश में पिछले कुछ माह के लॉकडाउन के चलते हर तरफ सभी कुछ बंद होने के कारण पर्यावरण को पुनर्जीवित होने के लिए भरपूर अवसर मिल गया है, जिसके चलते देश में आजकल सभी प्रकार के प्रदूषण से लोगों को काफी राहत मिली है, लेकिन महत्वपूर्ण विचारणीय प्रश्न यह है कि देश में पर्यावरण की यह स्थिति लगातार किस प्रकार बनी रहे, अब तो चलो कोरोना वायरस के संक्रमण से बचाव के लिए देश में हुए लॉकडाउन से पर्यावरण को संजीवनी मिल गयी, लेकिन लॉकडाउन खुलने के पश्चात भविष्य में यह स्थिति किस प्रकार बरकरार रखें यह चुनौती व जिम्मेदारी देश के हर व्यक्ति को समझनी होगी।

आज हम लोग जिस तरह से बहुत तेजी के साथ अव्यवस्थित ढंग से दुष्प्रभाव के बारे में बिना सोचे समझे आधुनिक तकनीकी का इस्तेमाल कर रहे है वह उचित नहीं है। हमारे देश में

किसी भी प्रकार से प्रकृति व पर्यावरण के साथ सामंजस्य बनाकर प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करना आज एक बहुत बड़ी चुनौती बन गया है। सभी पक्षों के द्वारा कानून पर्यावरण के सरंक्षण पर होने वाले खर्चों में चोरी छिपे कटौती करके अत्याधिक लाभ कमाने के उद्देश्य से प्रदूषण नियंत्रण के नियम कानूनों की अनदेखी करने वाली सोच प्रदूषण कम करने में बहुत बड़ी बाधक है। आज हमारे देश के सारे सिस्टम की सोच देश में स्थापित उद्योगों के लिए अपने देश के प्राकृतिक संसाधनों का बहुत ज्यादा दोहन करने की हो गयी है, जिसके चलते हम स्वयं भूमि, जल व वायु को प्रदूषित करके देश को जल्द से जल्द विकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों की श्रेणी में ले जाने का प्रयास कर रहे हैं।

भविष्य में यह स्थिति हम सभी के स्वास्थ्य व पर्यावरण संरक्षण के लिए बेहद घातक है और इस समस्या से हमारे देश के नीति–निर्माता ही नहीं बल्कि समस्त विश्व के पर्यावरण प्रेमी भी अवगत और चिंतित है। आज खुद मानव जनित घातक प्रदूषण के चलते मनुष्य व जीव जंतु जिस तरह के प्रदूषित वातावरण में रह रहे है, अगर स्थिति को यही पर समय रहते तत्काल नियंत्रित नहीं किया गया, तो आने वाले समय में अब तरह–तरह की समस्याओं के चलते स्थिति दिन–ब–दिन बहुत तेजी से खराब होती जायेगी। यह हालात बरकरार रही तो देश में बहुत सारी जगहों पर पीने योग्य पानी, सांस लेने के लिए स्वच्छ वायु व केमिकल रहित मिट्टी बीते दिनों की बात हो सकती है। देश में हर तरफ प्रदूषण की भयावह हालात होने के बाद आज भी हमारे देश में बार–बार पर्यावरण संरक्षण को लेकर के नियम कायदा–कानूनों के सही ढंग से अनुपालन के संदर्भ में सर्वोच्च न्यायालय से बेहद तल्ख टिप्पणी आती है, हमारे देश के सिस्टम को प्रदूषण व पर्यावरण से जुड़े बेहद गंभीर मसलों पर एनजीटी जैसी महत्वपूर्ण शीर्ष संस्था आये दिन फटकार

लगाती रहती है, लेकिन उसके बाद भी पर्यावरण संरक्षण के लिए बेहद आवश्यक प्रभावी कदम कागजों की बंद फाईल से निकल कर धरातल पर न जाने क्यों व किसके दवाब में आसानी से कार्यान्वित नहीं हो पाते हैं। देश में बेहद तेजी के साथ बढ़ते प्रदूषण के स्तर के बाद भी पर्यावरण संरक्षण के बेहद ज्वलंत मसले पर केन्द्र सरकार व राज्य सरकार की रोजमर्रा की कार्यप्रणाली में प्रदूषण नियंत्रण धरातल पर प्राथमिकता में बिल्कुल भी नजर नहीं आती है।

आज हम सभी देशवासियों को समय रहते यह समझना होगा, कि पर्यावरण संरक्षण सिर्फ 'विश्व पर्यावरण दिवस' पर भाषण देकर, फिल्म देखकर, किताब पढ़कर या लेख लिखकर नहीं हो सकता, बल्कि हर भारतवासी को अपनी प्यारी धरती के प्रति अपनी जिम्मेदारी दिल व दिमाग दोनों से समझनी होगी, तभी भविष्य में धरातल पर प्रदूषण नियंत्रण के कुछ ठोस प्रभाव नजर आ सकेंगे। लेकिन बेहद अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि चंद लोगों को छोड़कर हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण के मसले पर किसी भी पक्ष में कोई गंभीरता नजर नहीं आती है। लेकिन देश में इसकी आड़ में बहुत लम्बे समय से सरकारी फंड की जबरदस्त बंदरबांट जरूर जारी है। हर वर्ष करोड़ों वृक्ष लगा दिये जाते है जो सिवाय कागजों के कहीं नजर नहीं आते हैं। देश में पर्यावरण संरक्षण के बेहद ज्वंलत मसले पर सुप्रीम कोर्ट की तय गाइडलाइंस व एनजीटी के निर्णयों पर अमल की स्थिति को देखकर लगता है कि कही ना कही हमारे देश के सिस्टम की भयंकर इरादतन लापरवाही के चलते सर्वोच्च संस्थाएं अब पर्यावरण संरक्षण के अपने निर्णयों पर अमल कराने में अपने आपको असहाय लाचार महसूस कर रही है।

कोरोना संक्रमण से बचने के लिए देश में लगाए गए लॉकडाउन के बाद आया 'विश्व पर्यावरण दिवस' इस बार हम सभी लोगों को एक बेहद महत्वपूर्ण सबक देता है कि देश में हर तरफ फैले बेहिसाब घातक प्रदूषण के लिए हम स्वयं जिम्मेदार हैं, क्योंकि जिस तरह से देश में कल–कारखाने व अन्य सभी कुछ कार्य बंद होने के चलते जल, वायु व भूमि प्रदूषण में चंद दिनों में ही भारी कमी आयी है, उसने सभी विशेषज्ञों को भी आश्चर्यचकित कर दिया है। आज जो नदियां करोड़ों रुपये सालाना स्वच्छता पर खर्च करने के बाद भी साफ नहीं हो पा रही, वह सभी लॉकडाउन में सब कुछ बंद होने के चलते स्वतः साफ हो गयी हैं। लॉकडाउन की वजह से साफ हुए नदी, जल स्रोत, स्वच्छ वायु, साफ नीले तारे टिमटिमाता आसमान, स्वछंद घूमते जीव–जंतु आदि हम सभी को एक बहुत महत्वपूर्ण संदेश देते है कि यह सब घातक प्रदूषण मानव के द्व ारा स्वयं पैदा किया गया है। इसलिए प्रकृति का हम सभी लोगों के लिए बिल्कुल स्पष्ट संदेश है कि देश में भूमि, जल, वायु व ध्वनि प्रदूषण कम करने की जिम्मेदारी हमारी खुद की है, आज से ही हम सभी लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए जीवनदायिनी प्रकृति के साथ तालमेल बना कर चलना होगा, भविष्य में हमको प्राकृतिक संसाधनों का सोच–समझकर और बेहद सावधानी से उपयोग करना होगा, तब ही आने वाले समय में देश में पर्यावरण का संरक्षण ठीक से होगा और हम सभी लोगों की रोजमर्रा की जरूरतों को प्रकृति पूर्ण कर पाएगी। आज हमको ध्यान रखना होगा कि प्रदूषण का बढ़ते स्तर का ज्वंलत मुद्दा, आने वाले समय में देशों में सीमा, जाति और अमीर–गरीब की दीवारों को समाप्त करने वाला यह ऐसा मुद्दा होगा जिस पर पूरी दुनिया के लोगों को जीवन को सुरक्षित बचायें रखने के लिए हर हाल में एक होना होगा। आज हमको अपने सेवा भाव, दृढसंकल्प व दृढइच्छाशक्ति के बलबूते देश में पर्यावरण संरक्षण को भाषणों, फिल्मों, किताबों और लेखों से बाहर लाकर, हर भारतवासी को प्रकृति व पर्यावरण के प्रति अपनी बेहद महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को समय रहते दिल व दिमाग दोनों से समझना होगा, तभी भविष्य में प्रदूषण कम होगा और धरातल पर पर्यावरण संरक्षण के कुछ ठोस प्रभाव नजर आ सकेंगे।

आत्मा और परमात्मा का आपस में संबन्ध क्या है?

श्री ब्रजेश कुमार शर्मा
क. हि. अनुवादक
निनिअ–दिल्ली

आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, इन दोनों का आपस में सबन्ध क्या है– इस विषय का नाम अध्यात्मवाद है। आत्मा और परमात्मा दोनों ही भौतिक पदार्थ नहीं हैं। इन्हें आँख से देखा नहीं जा सकता, कान से सुना नहीं जा सकता, नाक से सूँघा नहीं जा सकता, जिह्वा से चखा नहीं जा सकता, त्वचा से छुआ नहीं जा सकता। परमात्मा एक है, अनेक नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि उसी एक ईश्वर के नाम हैं। (एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋग्वेद–1–164–46) अर्थात् एक ही परमात्मा शक्ति को विद्वान लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। संसार में जीवधारी प्राणी अनन्त हैं, इसलिए आत्माएँ भी अनन्त हैं। न्यायदर्शन के अनुसार ज्ञान, प्रयत्न, इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख–ये छः गुण जिसमें हैं, उसमें आत्मा है। ज्ञान और प्रयत्न आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं, बाकी चार गुण इसमें शरीर के मेल से आते हैं। आत्मा की उपस्थिति के कारण ही यह शरीर

प्रकाशित है, नहीं तो मुर्दा अप्रकाशित और अपवित्र है। यह संसार भी परमात्मा की विद्यमानता के कारण ही प्रकाशित है। आत्मा और परमात्मा– दोनों ही अजन्मा व अनन्त हैं। ये न कभी पैदा होते हैं और ना ही कभी मरते हैं, ये सदा रहते हैं। इनको बनाने वाला कोई नहीं है। आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है। हर आत्मा एक अलग और स्वतन्त्र सत्ता है। आत्मा अणु है, बेहद छोटी है। परमात्मा आकाश की तरह सर्व व्यापक है। आत्मा का ज्ञान सीमित है, थोड़ा है। परमात्मा सर्वज्ञ है, वह सब कुछ जानता है। जो कुछ हो चुका है और हो रहा है, सब कुछ उसके संज्ञान में है। अन्तर्यामी होने से वह सभी के मनों में क्या है– यह भी जानता है। आत्मा की शक्ति सीमित है, थोड़ी है, परन्तु परमात्मा सर्वशक्तिमान है। सृष्टि को बनाना, चलाना, प्रलय करना– आदि अपने सभी काम करने में वह समर्थ है। पीर, पैगम्बर, अवतार आदि नाम से कोई एजेंट या बिचौलिए उसने नहीं रखे हैं। ईश्वर सभी काम अपने अन्दर से करता है, क्योंकि उसके बाहर कुछ भी नहीं है। ईश्वर जो भी करता है, वह हाथ–पैर आदि से नहीं करता, क्योंकि उसके यह अंग है ही नहीं। वह सब कुछ इच्छा मात्र से करता है। ईश्वर आनन्द स्वरूप है। वह सदा एकरस आनन्द में रहता है। वह किसी से राग–द्वेष नहीं करता। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से परे है। ईश्वर की उपासना करने से अर्थात् उसके समीप जाने से आनन्द प्राप्त होता है, जैसे सर्दी में आग के पास जाने से सुख मिलता है। ईश्वर निराकार है। उसे शुद्ध मन से जाना जा सकता है, जैसे हम सुख–दुःख मन में अनुभव करते हैं। यह आत्मा जब मनुष्य शरीर में होती है।

तब वह कार्य करने में स्वतन्त्र रहती है। उस समय किए कार्यों के अनुसार ही उसे परमात्मा सुख, दुःख तथा अगला जन्म देता है। दूसरी योनियाँ या तो किसी दूसरे के आदेश पर चलती हैं या स्वभाव से काम करती हैं। उनमें विचार शक्ति नहीं होती, इसलिए उन योनियों में की गई क्रियाओं का उन्हें अच्छा या बुरा फल नहीं मिलता। वे केवल भोग योनियाँ हैं जो पहले किए कर्मों का फल भोग रही हैं। मनुष्य योनि में कर्म और भोग दोनों का मिश्रण है। मनुष्य स्वतन्त्र रूप से कर्म भी करता है और कर्मफल भी भोगता है। मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ। शरीर मेरा संसार में व्यवहार करने का साधन है। कर्ता और भोक्ता आत्मा है। सुख–दुःख आत्मा को होता है। जीवात्मा न स्त्रीलिंग है, न पुलिंग है और न ही नपुंसक है। यह जैसा शरीर पाता है, वैसा कहा जाता है। (श्वेताश्वतरउपनिषद्) ईश्वर की पूजा ऐसे नहीं की जाती, जैसे मनुष्यों की पूजा अर्थात सेवा सत्कार किया जाता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन अर्थात सत्य और न्याय का आचरण– यही ईश्वर की पूजा है। मनुष्य–शरीर की तुलना घोड़ागाड़ी से की गई है। इसमें आत्मा गाड़ी का मालिक अर्थात सवार है। बुद्धि सारथी अर्थात् कोचवान है, मन लगाम है, इन्द्रियाँ घोड़े हैं। इन्द्रियों के विषय वे मार्ग हैं, जिन पर इन्द्रियाँरूपी घोड़े दौड़ते हैं। आत्मारूपी सवार अपने लक्ष्य तक तभी पहुँचेगा, जब बुद्धिरूपी सारथी मनरूपी लगाम को अपने वश में रखकर इन्द्रियाँ रूपी घोड़ों को सन्मार्ग पर चलाएगा। उपनिषद में घोड़ागाड़ी को रथ कहा जाता है और रथ पर सवार को रथी। मनुष्य शरीर में आत्मा रथी है। जब आत्मा निकल जाती है, तब शरीर अरथी रह जाता है। परमात्मा हम सबका माता, पिता और मित्र है। हम सब प्राणियों का भला चाहता है। जब मनुष्य कोई अच्छा काम करने लगता है तो उसे आनन्द, उत्साह, निर्भयता महसूस होती है। वह परमात्मा की तरफ से होता है, और जब वह कोई बुरा काम करने लगता है, तब उसे भय, शंका, लज्जा महसूस होती है। वह भी परमात्मा की तरफ से ही होता है।

नैतिक मार्गदर्शन में नियम, कानून एवं अर्न्तआत्मा का साथ

श्रीमती आकांक्षा मिश्रा
लिपिक श्रेणी–II
निर्यात निरीक्षण अभिकरण– दिल्ली

नैतिकता, मूल्यों और विश्वासों की एक प्रणाली को संदर्भित करती है जो हमें सही और गलत या अच्छे और बुरे व्यवहार के बीच अंतर करने में सहायता करती हैं।

व्यक्ति जब कोई कार्य करता है तो वह यह भी जानना चाहता है कि उसका यह कार्य नैतिक है या अनैतिक? व्यक्ति खुद में स्वयं के सोच से नैतिकता और अनैतिक में अंतर करने की कोशिश करता रहता हैं। अतः किसी कर्म की नैतिकता या अनैतिकता के लिए व्यक्ति के पास दो मार्गदर्शक स्त्रोत होते हैं। बाह्य और आंतरिक स्त्रोत। बाहय स्त्रोत के रूप में सामाजिक नियम कानून और न्याय व्यवस्था हैं वहीं स्वयं अपनी अंतरात्मा जो व्यक्ति को खुद से यह सोचने पर मजबूर कर देती हैं कि क्या उचित है और क्या अनुचित? इन दोनों स्त्रोतों के जरिये व्यक्ति को कर्म के प्रति यह निर्णय लेने में आसानी होती हैं कि नैतिक/अनैतिक इसका परिणाम किस प्रकार से हो सकता हैं।

नैतिकता हमें विभिन्न सामाजिक मानदंडों और नियमों के संबंध में मार्गदर्शन भी प्रदान करती है। इस प्रकार यह विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों के सह–अस्तित्व को सुगम बनाती हैं।

बाहय स्त्रोतों के रूप में मनुष्यों पर प्राकृतिक कानून के दो प्रभाव देखे जाते हैं। प्राकृतिक कानून न केवल यह कहता है कि क्या अच्छा है और क्या बुरा हैं। बल्कि नैतिकता को सुदृढ़ एवं सकारात्मकता प्रदान करता हैं। प्राकृतिक कानून का पालन करने के लिए पुरस्कार है और उसका अनुपालन नहीं करने के लिए दंड का प्रावधान हैं। कुछ प्रतिबंध प्राकृतिक है या प्राकृतिक कार्य का प्राकृतिक तौर पर अनुसरण करता हैं। अन्य प्रतिबंध सकारात्मक हैं। इस अर्थ में कानून निर्माता मुक्त होकर उसको प्रयोग करता है।

आंतरिक नैतिक मार्गदर्शन के स्त्रोत के रूप में, अंतरात्मा मस्तिष्क का विशेष कार्य है जिसकी भूमिका तब मायने रखती है जब व्यक्ति की बौद्धिक शक्ति किसी विशेष कार्य की अच्छाई या बुराई पर कोई निर्णय देती हैं। यह विशेष, मजबूत मानव प्रक्रियाओं पर व्यावहारिक निर्णय हैं। इसी क्रम में अंतरात्मा एक बौद्धिक निर्णय हैं। हम लोग अक्सर लोगों का ऐसा कहते हुए पाते हैं कि "जो तुम्हें अच्छा लगे तो उसे करो।" लेकिन क्या वास्तव में जो भी अच्छा लगे उसे करना नैतिक रूप से जायज हैं? अंतरात्मा कार्य विशेष के संदर्भ में भी निर्णय देती हैं। अंतरात्मा, पूर्व के क्रियाकलापों या घटित होने वाले क्रियाकलापों की नैतिकता पर व्यवहारिक निर्णय ले सकती हैं।

बेटियाँ

श्रीमती अनु कुमारी
लिपिक श्रेणी–II
निनिअ–दिल्ली

गर्व कीजिये अगर आपके घर में एक प्यारी सी बिटिया का जन्म होता है

घर में इक किलकारी गूंजी है!
हाँ हाँ! वो प्यारी सी बेटी है!!
बचपन में रुंझुन सी पायल से
घर में संगीत सजाती है!!
यौवन आते ही वो बच्ची सबकी माँ बन जाती है!!
पापा की दवाई, माँ की रसोई
भाई को पढ़ाने की लगन,
पर गलती करने पर वो टीचर सी डांट लगाती है!!
अफ़सोस करो तो बस इसका,
जब वो बिटिया छोड़ जाएगी!!
माँ का दिल तो बस इस बात से डरता
की कब ये बिटिया बड़ी हो जाएगी!!

माना की एक दिन हमको छोड़ कर दूसरे घर चली जाएगी
पर जब भी हमें जरूरत होगी वो बिटिया ही भागी आएगी!!
साथ जरूर छूट जाएगा पर वो नहीं छोड़ कर जाएगी
बस फर्क ये होगा की दो माओं की बिटिया बन जाएगी!!
सूना कर जायेगी बेशक घर आँगन
पर प्यार इतना देगी की काम पर जाएगा ये जीवन!!

अगर बेटा एक अभिमान है, तो बेटियाँ भी वरदान है

बेटियाँ ही समाज की धरोहर है! इनकी रक्षा ,सुरक्षा वर्तमान समय की जरूरत है
बेटा सिर्फ एक ही कुल को रोशन करता है। किन्तु बेटियाँ तो दो–दो कुलों की नाज होती है।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ राष्ट्रीय अभियान वास्तव में कई समस्याओं में सहायक साबित हो सकता है।
जरूरत है उन्हें सुरक्षा और शिक्षा प्रदान कर मुख्यधारा से जोड़ने की।

सकारात्मकता

श्री आकाश कुमार चौबे
लिपिक श्रेणी–II
निर्यात निरीक्षण अभिकरण–कोलकाता

सकारात्मकता का अर्थ है कि व्यक्ति विषम परिस्थितियों में भी अपना संयम बनाए रखता है। हमारे विचार ही हमारे व्यक्तित्व और जीवन को आकार देते हैं। विचार मूलतः दो प्रकार के होते हैं। सकारात्मक और नकारात्मक। सकारात्मक विचार हमारे जीवन को सार्थक बनाते हैं। ये हमें बेहतर करने के लिए प्रेरित करते हैं। सकारात्मकता की शक्ति हमें अपनी ऊर्जा के सही उपयोग में सहायता करती है।

जितने भी महापुरुष हुए हैं उन्होंने आत्मविश्वास, दृढ़ इच्छाशक्ति व सकारात्मक ऊर्जा के द्वारा अपने पथ की सारी बाधाओं को दूर करके नवीन पथ का निर्माण किया है। नकारात्मक भावना रखने वाला व्यक्ति कभी भी सफल नहीं होता, क्योंकि उसकी सोच में आशंका की स्थिति होने के कारण वह अपने आप पर विश्वास नहीं करता।

चाहे कितनी भी कठिन परिस्थिति क्यों ना हो, अगर सोच पॉजिटिव हो तो हमें यह विश्वास होता है कि हम इस परिस्थितियों से पार लग जाएंगे। ज्यादातर व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में अपना धैर्य खो देते हैं।

नकारात्मकता को दूर करने के कुछ उपाय निम्न हैं –

- उत्साह को कम न होने दें। न अपने सपनों को कम करें। हमेशा बड़े सपने को लेकर जिएं। जब आप ऐसा करेंगे तो जीवन में सदैव सक्रियता बनी रहेगी। हां, टाइम मैनेजमेंट भी जरूरी है। एक और बात– जीवन को भी उत्सव बनाएं, उसमें कलात्मकता लाएं, फिर देखें पूरा जीवन आपको संगीत की तरह मधुर लगेगा।
- नकारात्मक को हटाएं। नकारात्मक होना बहुत सरल है। रिजेक्शन में कोई कठिनाई तो है नहीं। स्वीकृति में जरूर कठिनाई है। हम जिस परिवेश में रह रहे हैं वह स्वाभाविक रूप से अस्वीकृति और अमान्यता का परिवेश है। इसमें शीर्षस्थ पुरुषों को भी अमान्य कर दिया जाता है। उनकी नीतियों, उनके श्रम, साधना पर तो ध्यान है नहीं। चूंकि हम किसी कारण से वहां तक नहीं पहुंच पाए हैं तो उनके प्रति अमान्य हो जाते हैं।
- नूतन विचारों को पढ़ें, उनका प्रयोग करें। अभी अध्ययन खो गया है। साहित्य नहीं पढ़ रहे हैं। हम महापुरुषों की, वैज्ञानिकों की, विचारकों की आत्मकथाएं पढ़ सकते हैं। उनकी गौरव गाथाएं पढ़ें जिससे आप नैतिक रूप से मजबूत हो सकें। उनकी आत्म कथाओं से पता लगेगा कि उन्होंने चुनौतियां किस रूप में लीं, कठिनाइयों को किस तरह से सरल किया।

असफलता में ही छुपी है सफलता

श्री कमल डे,
एमटीएस
निनिअ–दिल्ली

असफलता निराशा देती है, परंतु बुद्विमानी इसी में हैं कि असफलता को पीछे छोड़ सफलता हेतु पुनः नये सिरे से प्रयास किए जाए। इतिहास में एवं हमारे आसपास ऐसे उदाहरणों की भरमार है जो कि इस बात की पुष्टि करते है कि बराबर एवं लगातार प्रयास ही सफलता को सुनिश्चित करते है। हमें सफल व्यक्ति को अपना प्रेरणा का सोत्र बनाना चाहिए, उनकी सफलता की कहानी हमे बताती है कि कैसे उन्होनें बिना हार माने अपनी असफलता को ही आगे बढ़ने के हथियार के रूप में प्रयोग किया।

आज बच्चे, युवा, बुजुर्ग हर वर्ग के लोग वाट्स एप इस्तेमाल करते है। युवा वर्ग तो विशेष इसका दिवाना है। इसके संस्थापक **जैन कौम और ब्रायन ऐक्टन** को फेसबुक ने नौकरी देने से इन्कार कर दिया था। **सन् 2009** में दोनो ने मिलकर **वाट्स एप** की नीव रखी, और देखते ही देखते सफलता की उस ऊंचाई को छुआ कि फेसबुक ने स्वयं में उनके पास जाकर वाट्स एप को **10 लाख डालर** में खरीदकर उन्होने इसको चरित्रात किया। उबर के संस्थापक **ट्रेविस कैलेनिक** और **गैलेट कैम्प** को एक स्टेशन पर टैक्सी नही मिलना और टैक्सी के लिए परेशान होने पर इस विश्व को एक नया वरदान दिया और उस दिन हुई परेशानी से प्रेरित होकर दोनों ने उबर की स्थापना की और अपनी स्वयं की एक भी कार खरीदे बिना पूरे विश्व को टैक्सी उपलब्ध करवा दी और सफलता प्राप्त की तथा दूसरों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने जिससे ओला, जूगनू जैसी अन्य कम्पनियॉ भी बन सकी।

असफलता, आपके अपने लक्ष्य के प्रति किए गए प्रयास का प्रमाण है असफलता हमें सीखने का मौका देती है जिससे हमें सफल होने का महत्व पता चलता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि परिस्थितियों से बिना घबराए खुद को सकारात्मक रखते हुए आने वाली हर चुनौती का सामना किया जाए। सफल हुए तो ठीक अन्यथा हर असफलता को सीखने का नया मौका मानते हुए पुनः प्रयास करने की सोच रखनी चाहिए जोकि सफलता तक हर हालत में आपको पहुँचाएगी।

सेवानिवृत्त कर्मचारी

निर्यात निरीक्षण परिषद / निर्यात निरीक्षण अभिकरण कार्यालयों में अप्रैल, 2023 से सितंबर, 2023 तक सेवानिवृत अधिकारी एवं कर्मचारीगण

क्र. सं.	नाम	पदनाम	अभिकरण	सेवानिवृत्त तिथि
1.	श्री. पी. के. ज़ाकिर हुसैन	उप निदेशक (तकनीकी)	निनिअ–कोच्चि	31.05.2023
2.	श्रीमती के. एस. सुगंथी	उप निदेशक (तकनीकी)	निनिअ–चेन्नई	31.05.2023
3.	श्रीमती कमलेश गुप्ता	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	निनिप	31.05.2023
4.	श्री. वी.एस. शिंदे	प्रयोगशाला परिचारक	निनिअ–मुंबई	31.05.2023
5.	श्रीमती मंजू अत्रे	एमटीएस	निनिअ–दिल्ली (मुख्यालय)	31.05.2023
6.	श्रीमती दर्शना आहूजा	एमटीएस	निनिप	31.05.2023
7.	श्रीमती एम. उषा	लिपिक श्रेणी–I	निनिअ–कोच्चि (मुख्यालय)	31.07.2023
8.	श्रीमती ए. जया	एमटीएस	निनिअ–चेन्नई	31.09.2023